डाक पंजीयन क्र. L/ RNP/म.प्र./ मन्दसौर/122/ 2024- 26

ई-पेपर www.guruexpress.live

बात आपकी, शब्द हमारे

गुरु एक्सप्रेस

सुबह का अखबार

संपादक – आशुतोष नवाल

वर्ष 19 | अंक 287 | पृष्ठ 4 | मन्दसौर | शनिवार 02 अगस्त 2025 | मूल्य 2 रुपया

असिस्टेंट कमांडेंट ने किया खुदकुशी का प्रयास

सीनियर अफसरों पर प्रताड़ना का आरोप, डिप्रेशन की गोलियां खाई...!

जावरा, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। शहर में स्थित 24वीं बटालियन के असिस्टेंट कमांडेंट रामबाबू पाठक ने शुक्रवार सुबह डिप्रेशन की गोलियां खाकर खुदकुशी करने का प्रयास किया। परिजन उन्हें तत्काल प्राइवेट क्लिनिक लेकर गए। जहां से शुक्रवार दोपहर उन्हें रतलाम मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया। इसके बाद उन्हें इंदौर के बॉम्बे हॉस्पिटल भेजा गया है। परिजन एम्बुलेंस से लेकर उन्हें रवाना हुए।

असिस्टेंट कमांडेंट की पत्नी और बेटी ने बटालियन के सीनियर अधिकारियों पर प्रताडना का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि लगातार ड्यूटी के चलते रामबाबू डिप्रेशन में थे। हालांकि, उन्होंने फिलहाल किसी अफसर का सीधे तौर पर नाम नहीं लिया है। शुक्रवार सुबह रामबाबू बटालियन की परेड में शामिल हुए थे। बताया जा रहा है कि उन्होंने सुसाइड नोट फेसबुक पर पोस्ट किया था, जिसे बाद में डिलीट कर दिया। बेटी ने बताया कि पापा ने दुनिया छोड़ कर जाने का एक लेटर लिखा है। हालांकि, खबर लिखे जाने तक लेटर सामने नहीं आया था।

इस माह त्यौहार ही त्यौहार

मंदसौर, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। अगस्त माह का प्रारंभ शुक्रवार से हुआ। हिंदी वर्ष के अनुसार इस समय सावन माह चल रहा है। अगस्त माह में सावन-भादौ के संगम में अनेक त्यौहारों की धूम रहेगी। इस दौरान राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता दिवस के साथ-साथ कई त्यौहारों की रौनक शहर में छाई रहेगी। शहर में हर दूसरे दिन एक व्रत, पर्व रहेगा। इस समय सावन के पवित्र माह में शहर में भक्ति का नजारा दिखाई दे रहा है। अगस्त में जहां रक्षाबंधन, भुजरिया, जन्माष्टमी, गणेश उत्सव के साथ-साथ आजादी के पर्व स्वतंत्रता दिवस का जश्न भी दिखाई देगा।

यह है सावन-भादौ के तीज-त्यौहार...

इस माह 04 अगस्त को चौथा सावन सोमवार, 05 अगस्त पुत्रदा एकादशी, 06 अगस्त प्रदोष व्रत, 09 अगस्त रक्षाबंधन, श्रावणी पर्व, 10 अगस्त भुजरिया, 14 अगस्त हल षष्ठी, 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस, 16 अगस्त श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, 17 अगस्त गोगा नवमी, 18 अगस्त अमृत सिद्धि योग, 19 अगस्त जया एकादशी, 20 अगस्त प्रदोष व्रत, 21 अगस्त अमृत सिद्धि योग, गुरु पुष्य योग, 23 अगस्त कुशोत्पाटनी अमावस्या, 26 अगस्त हरतालिका तीज, 27 अगस्त गणेश चतुर्थी, गणेश उत्सव प्रारंभ, 28 अगस्त ऋषि पंचमी, 30 अगस्त संतान सप्तमी, त्रिपुष्कर योग, 31 अगस्त राधा अष्टमी का त्यौहार मनाया जायेगा।

विद्युत मंडल: अब कंपनी के... टारगेट पर बड़े बकायादार

बैंक खाते हो रहे सील, अब तक डेढ़ हजार से ज्यादा पर कार्रवाई

मंदसौर, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। मप्रविविकं 'विद्युत मंडल' को बिल वसूली के मामले में छोटे उपभोक्ताओं की बजाय बड़े उपभोक्ता ज्यादा परेशान करते हैं। जहां छोटे उपभोक्ता हर माह बिल की अदायगी करते हैं तो वहीं बड़े उपभोक्ता कंपनी के कर्जदार बनते हुए कंपनी का लोड वित्तीय वर्ष के पहले तक बहुत ज्यादा बढ़ा देते हैं। लेकिन, अब ऐसे बड़े उपभोक्ता कंपनी के टारगेट पर है। मार्च से पहले नहीं, बल्कि अभी से ही कंपनी ने इन पर सख्ती करना शुरू कर दी है। ताकि वित्तीय वर्ष के समय ज्यादा तनाव नहीं हो। ऐसे करीब डेढ़ हजार उपभोक्ताओं के बैंक खाते सील किए गए है। इन पर दो करोड़ रूपये से ज्यादा की राशि बकाया है।

आम तौर पर मार्च माह में बिजली कंपनी वसूली के लिए कार्रवाई करती है। लेकिन, इस बार मार्च में वसूली का अधिक लोड नहीं बढे इसलिए अभी से ही कार्रवाई शुरू कर दी है। कंपनी के अमले ने अब तक 01 हजार 693 बकायदार उपभोक्ताओं के बैंक खातों को सील करवाते हुए उनका लेन-देन रोक दिया है। इतना ही नहीं जब तक उनकी राशि जमा होने के बाद बैंक से सूचना नहीं मिलेगी। बैंक उनका लेन-देन भी शुरू नहीं करेगा। ऐसे में उपभोक्ताओं की परेशानी बढ़ी तो राशि जमा होना शुरू हो गई। जिन 01 हजार 693 उपभोक्ताओं के खाते सील किए गए है। उन पर 02 करोड़ 13 लाख से अधिक की बिजली बिलों की राशि बकाया है। इसमें घरेलु से लेकर व्यवसायिक उपभोक्ता शामिल है।

ऐसे किए बैंक खाते सील...

बिजली कंपनी के अमले ने 10 हजार से अधिक बकाया राशि वाले उपभोक्ताओं को चिन्हित किया। इसके बाद उन्होंनें बैंकों को इन उपभोक्ताओं के बैंक खातों को सील कराना शुरू किया गया। अब तक 01 हजार 693 उपभोक्ताओं के खाते अलग-अलग बैंकों में सील कराए जा चुके है। उपभोक्ताओं के खातें में राशि जमा होने के बाद भी उनका लेन-देन रूकवा दिया गया है। इतना ही नहीं उन्हें यह सूचना भी भेजी जा चुकी है कि बकाया राशि जमा कराने पर ही बिजली कंपनी की और से बैंकों को सूचना दिए जाने के बाद भी उनके खाते का लेन-देन फिर से खुलेगा। खातों को सील कराने के फॉर्मूले से बिजली कंपनी की वसूली भी हो रही है।

स्मार्ट मीटर पर इंदौर से कट जाता कनेक्शन...

बिजली कंपनी ने मंदसौर शहर के अलावा सुवासरा क्षेत्र में स्मार्ट मीटर लगाने का काम किया है। स्मार्ट मीटर पर बिजली बिल की राशि जमा नहीं होने से इंदौर कंट्रोल रूम से सीधे कनेक्शन काट दिया जाता है। राशि जमा कराने के बाद वहीं से जुडता है। ऐसे में बकाया की समस्या स्मार्ट मीटर वाले क्षेत्रों में कम है। लेकिन, बाकी जिले और अधिकांश ग्रामीण अंचल में बकाया राशि वाली समस्या अधिक है। इसी कारण जिनके खाते सील किए जा रहे है, उनमें अधिकांश उपभोक्ता ग्रामीण अंचल से जुड़े हुए है।

मौसम : अब चार दिन भारी बारिश का अलर्ट नहीं

मंदसौर, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। पिछले चार-पांच दिनों तक बादलों का डेरा आसमान पर मौजूद था। इस बीच बारिश भी हुई। शुक्रवार को मौसम खुला। सुबह धूप खिली। मध्यप्रदेश में इस मानसूनी सीजन में 28 इंच बारिश हो चुकी है, जो कोटे की 74 प्रतिशत है। पूर्वी हिस्से यानी जबलपुर, रीवा, शहडोल और सागर संभाग में मानसून जमकर मेहरबान रहा। इस वजह से बाढ़ के हालात भी बन गए। हालांकि, अब भारी बारिश का दौर थम गया है। स्ट्रॉन्ग सिस्टम की एक्टिविटी नहीं होने से अगले 04 चार दिन भारी बारिश का अलर्ट नहीं है।

इससे पहले गुरुवार को 15 से अधिक जिलों में हल्की बारिश का दौर जारी रहा। इनमें भोपाल, बैतूल, दतिया, गुना, ग्वालियर, नर्मदापुरम, पचमढ़ी, दमोह, जबलपुर, मंडला, रीवा, बालाघाट, शाजापुर, सीहोर, देवास शामिल हैं। कहीं भी अति भारी या भारी बारिश नहीं हुई। मौसम विभाग के अनुसार शुक्रवार को भोपाल, इंदौर, उज्जैन, ग्वालियर-जबलपुर समेत पूरे प्रदेश में कहीं-कहीं हल्की बारिश का दौर रहा। कहीं भी भारी बारिश का अलर्ट नहीं है। मौसम विभाग के अनुसार प्रदेश के पूर्वी हिस्से में अब तक 62 प्रतिशत और पश्चिमी हिस्से में 55 प्रतिशत पानी ज्यादा गिर चुका है।

कालाखेत में दुकानों पर अतिक्रमण मामला...

22 वर्षों से जस का तस, विस्थापन की राह अब भी धुंधली

नेमीचंद राठौर

मंदसौर, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। नगर के प्रमुख व्यापारिक केंद्र कालाखेत में पिछले 22 वर्षों से जारी अतिक्रमण की समस्या एक बार फिर विधानसभा में गूंजी। क्षेत्रीय विधायक विपिन जैन ने प्रश्न क्रमांक 208 के तहत इस गंभीर मुद्दे को उठाते हुए बताया कि शिक्षा विभाग की भूमि पर हाउसिंग बोर्ड द्वारा निर्मित दुकानों के सामने स्थित पार्किंग स्थलों पर खानाबदोश साठिया जाति के परिवारों ने झुग्गियां बना रखी हैं। इससे न केवल व्यापारी वर्ग को व्यवसाय में असुविधा हो रही है, बल्कि दुकानों पर भी कथित कब्जा किया गया है।

विधायक ने कहा कि यह समस्या एक या दो साल पुरानी नहीं, बल्कि दो दशक से अधिक समय से बनी हुई है। उन्होंने स्पष्ट कहा कि यहां निवासरत परिवारों को अन्यत्र विस्थापित किए जाने को लेकर व्यापारियों द्वारा समय-समय पर विरोध प्रदर्शन होते रहे हैं। लेकिन प्रशासनिक स्तर पर कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया।

इस पर जवाब देते हुए नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने माना कि राजस्थान क्षेत्र से आए एक समाज के लोगों का झुग्गियों के अलावा कुछ दुकानों पर भी कब्जा है। उन्होंने बताया कि इस विषय पर कलेक्टर और नगर पालिका सीएमओ से चर्चा हुई है और समाधान निकालने के प्रयास किए जाएंगे। हालांकि उन्होंने यह भी जोड़ा कि वर्तमान में वर्षा काल चल रहा है और मुख्यमंत्री के निर्देशानुसार इस दौरान किसी भी रहवासी को हटाया नहीं जा सकता।

विधायक विपिन जैन ने प्रति प्रश्न करते हुए कहा कि इसी प्रकार का उत्तर पिछली विधानसभा में भी दिया गया था, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अतिक्रमण की समस्या को गंभीरता से नहीं लिया जा रहा। उन्होंने मांग की कि इन परिवारों को वैकल्पिक व्यवस्था के तहत अन्यत्र विस्थापित किया जाए। जवाब में मंत्री विजयवर्गीय ने प्रधानमंत्री आवास योजना-2 के तहत आवास देने की संभावनाओं की बात कही। लेकिन, साथ ही यह भी स्पष्ट किया कि योजना के अंतर्गत केवल उन्हीं को लाभ दिया जा सकता है जिनके पास वैध पट्टे हैं। खानाबदोश समाज के पास कोई वैध पट्टे नहीं होने के कारण वे योजना के दायरे से बाहर हो जाते हैं। इस प्रकार कालाखेत क्षेत्र में अतिक्रमण की समस्या एक बार फिर चर्चा में आई है। लेकिन, समाधान अब भी अनिश्चित है। व्यापारी वर्ग परेशान है और प्रशासनिक प्रक्रिया ज्यों की त्यों बनी हुई है।

जीजा को गोली मारने वाले साले को 10 साल की सजा

नीमच, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। प्रथम अपर सत्र न्यायाधीश राकेश कुमार शर्मा ने जीजा पर जानलेवा हमला कर गोली मारने के आरोपी अनिल गौड़ उम्र 32 वर्ष को 10 साल के सश्रम कारावास की सजा सुनाई है। आरोपी पर 05 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया गया है।

अभियोजन के अनुसार घटना 23 सितंबर 2020 की रात करीब 10 बजे इंदिरा नगर नीमच स्थित आरोपी के घर की है। फरियादी डिंकूसिंह उर्फ पृथ्वीराज मंदसौर में रहता है। उसका साला अनिल गौड़ नीमच में रहकर जिला न्यायालय में चपरासी की नौकरी करता था। घटना के दिन फरियादी अपने साले से मिलने आया था। दोनों बैठकर बातचीत कर रहे थे। तभी आरोपी ने अपने जीजा से पूछा कि वह उसकी बहन के साथ मारपीट क्यों करता है। इस बात पर विवाद बढ़ गया। आरोपी ने अपने बिस्तर के नीचे रखी पिस्टल निकालकर फरियादी पर दो फायर किए। गोलियां उसके कमर और पेट पर लगी। फरियादी चिल्लाते हुए भागकर घर से बाहर आ गया। उसे डायल 100 की सहायता से अस्पताल पहुंचाया गया। फरियादी की शिकायत पर आरोपी के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई। जांच के दौरान आरोपी को गिरफ्तार किया गया और उसके कब्जे से पिस्टल जब्त की गई। न्यायालय ने आरोपी को भारतीय दंड संहिता की धारा 307 के तहत 10 साल का सश्रम कारावास और 05 हजार रुपए अर्थदंड और आयुध अधिनियम की धारा 27 के तहत 3 साल का सश्रम कारावास और 2000 रुपए अर्थदंड से दंडित किया है। मामले में सहायक जिला लोक अभियोजन अधिकारी विवेक सोमानी ने पैरवी की।

रक्षाबंधन से पहले बिछड़ा इकलौता भाई, चार बहनों की कलाई रह गई सूनी

पिपलियामंडी, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। रक्षाबंधन से ठीक पहले एक परिवार पर दुखों का पहाड टूट पड़ा। गांव भुनियाखेडी निवासी मजदूर कैलाश खारोल के घर का इकलौता बेटा दीक्षित (11) 1 अगस्त को जिंदगी की जंग हार गया। अहमदाबाद में इलाज के दौरान उसकी मृत्यु हो गई। वह पिछले कुछ समय से बीमार चल रहा था। चार बेटियों के बाद जन्मे दीक्षित के आने से परिवार में खुशियों की लहर दौड़ गई थी। सबकी दुआओं और इंतजार का फल था वह, लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। दीक्षित मंदसौर में कक्षा 6 वीं का छात्र था। पढाई में होशियार और स्वभाव से सरल दीक्षित पूरे परिवार की जान था, खासकर चारों बहनों का दुलारा। रक्षाबंधन के त्योहार की तैयारियां शुरू ही हुई थीं, लेकिन अब चारों बहनों की कलाई सूनी रह जाएगी। भाई को राखी बांधने का सपना अधूरा रह गया। 1 अगस्त की रात जब दीक्षित का पार्थिव शरीर गांव लाया गया, तो पूरे गांव की आंखें नम हो गईं। मां-बाप और बहनों का रो-रोकर बुरा हाल था। परिवार का इकलौता चिराग बुझ जाने से गांव में शोक की लहर है। दीक्षित का अंतिम संस्कार आज 2 अगस्त को गांव भुनियाखेडी में किया जाएगा।

अवैध शराब रखने के आरोप में आठ आरोपी गिरफ्तार

पिपलियामंडी, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। विभिन्न थाना क्षेत्रों में पुलिस द्वारा चलाए जा रहे अवैध शराब विरोधी अभियान के तहत आठ आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से हाथ भट्ठी कच्ची शराब एवं देशी शराब जब्त की गई है। सभी आरोपियों के विरुद्ध आबकारी अधिनियम के तहत प्रकरण दर्ज कर कानूनी कार्रवाई की जा रही है। पिपलियामंडी थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए काचरिया चंद्रावत निवासी मांगीलाल पिता फूलचंद बावरी को 4 लीटर हाथ भट्ठी कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार किया। नाहरगढ पुलिस ने जोधा पिपलिया निवासी रामलाल पिता ईश्वरलाल डांगी को 20 क्वार्टर देशी शराब के साथ पकडा। वहीं नारायणगढ थाना पुलिस ने हनुमंतिया निवासी भोपालसिंह पिता रामसिंह सौंधिया को 18 क्वार्टर देशी शराब के साथ दबोचा। इसी तरह काचरिया कदमाला निवासी शंभूलाल पिता किशनलाल बागरी को 16 क्वार्टर शराब के साथ गिरफ्तार किया गया। मल्हारगढ पुलिस ने बरखेडापंथ निवासी गणपत पिता मोहनलाल पंवार और जेतपुरा निवासी परसराम पिता नारायण मालवीय को 16-16 क्वार्टर देशी शराब के साथ पकडा। नई आबादी चंगेरी सांदा निवासी रामलाल बांचडा और ढाणी निवासी पंकज पिता तुलसीराम मेघवाल को 18-18 क्वार्टर देशी शराब के साथ गिरफ्तार किया गया।

दो सड़क दुर्घटनाओं में महिला व युवक गंभीर घायल

पिपलियामंडी, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। क्षेत्र में घटित दो अलग-अलग सडक दुर्घटनाओं में एक युवक और एक महिला गंभीर रूप से घायल हो गए। दोनों मामलों में संबंधित थानों में आरोपियों के विरुद्ध प्रकरण पंजीबद्ध किए गए हैं। पहली घटना 23 जुलाई की शाम लगभग 7 बजे पिपलियामंडी स्थित पुरानी स्मृति बैंक के सामने घटित हुई थी। जहां पल्सर बाइक (क्रमांक एमपी 14 जेडई 4238) के चालक ने तेज गति और लापरवाहीपूर्वक वाहन चलाते हुए खोखरा निवासी बद्रीलाल धनगर को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में बद्रीलाल गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल की शिकायत पर गुरुवार को पिपलियामंडी पुलिस ने बाइक चालक के विरुद्ध मामला दर्ज कर जांच प्रारंभ की। दूसरी दुर्घटना 31 जुलाई को फोरलेन पर बरखेडापंथ के समीप हुई, जहां बाइक (एमपी 14 एमके 5723) ने संदीप डाबी की बाइक (एमपी 14 एनडी 4547) को पीछे से टक्कर मार दी। इस हादसे में संदीप की पत्नी अन्नूबाई बाइक से गिर गई, जिससे उन्हें गंभीर चोटें आईं। संदीप डाबी की रिपोर्ट पर मल्हारगढ पुलिस ने आरोपी बाइक चालक के विरुद्ध प्रकरण दर्ज किया है।

डायल 100 का बदलेगा स्वरूप

डिजिटल वायरलैस पर बात करेगी पुलिस

भोपाल, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। प्रदेश की पुलिस अब बदल रही है। फोर्स को और आधुनिक बनाने की लगातार कवायद चल रही है। पुलिस मुख्यालय का प्लान है कि 15 अगस्त पर फोर्स को वायरलैस सेट से लेसकर डायल 100 सेवा को और आधुनिक बनाने से लेकर साइबर अपराधों पर नकेल कसने के लिए ठोस इंतजामों की शुरूआत की है। इस कोशिश में डायल 100 का तो स्वरूप ही बदला जा रहा है। नई कंपनी को इस सेवा की कमान सौंपी गई है। इसमें सेवा का नंबर 112 होगा और गाडियों की तादात भी दोगुनी होगी।

पुलिस अधिकारी कहते हैं आने वाले दिनों में डायल 100 सेवा प्रदेश में नए कलेवर में दिखेगी। करीब एक दशक पहले चालू हुई इस सेवा की कमान अब

हैदराबाद की कंपनी संभालेगी। दूसरे फेज में सेवा का नंबर भी डायल 100 से बदलकर 112 होगा। अभी तक प्रदेश में डायल 100 के एक हजार वाहन पुलिस की मदद के लिए थे, अब इनकी गिनती दोगुनी होगी।

स्ट्रेचर से लैस होगा वाहन...

पुलिस अधिकारियों के मुताबिक डायल 112 सेवा में वाहनों को शहर और देहात की सड़कों के हिसाब से रखा जाएगा। फिलहाल करीब 1200 वाहनों की खेप पीएचक्यू के पास आ चुकी है। इन्हें सड़क पर उतारने की तैयारी तो 15 अगस्त से है। लेकिन, वाहनों को पुलिस जरुरत के हिसाब से तैयार करवा रही है। अभी तक करीब 400 वाहन को तैयार किया गया है। सभी वाहनों को मॉडीफाई करने में कुछ वक्त और लग सकता है। वाहन में इस बार पुलिस बलवा ड्रिल और सुरक्षा के साधनों के साथ स्ट्रेचर भी रखेगी। क्योंकि, अक्सर वारदातों में जख्मी लोगों को इलाज के लिए ले जाने के लिए एंबुलेंस का इंतजार करना पड़ता है। इसमें कई बार घायल का गोल्डन ऑवर उसे अस्पताल तक पहुंचाने के लिए वाहन के इंतजार में ही निकल जाता है। अब डायल 112 में जख्मी व्यक्ति को ले जाने का इंतजाम भी रहेगा।

सड़क के लिये सड़क पर उतरी जनता

चक्काजाम कर किया प्रदर्शन, सात दिवस में सुधार का मिला आश्वासन

मंदसौर, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। मंदसौर-सीतामऊ-सुवासरा रोड पर कई खामियां होने और सड़क की जर्जर स्थिति तथा साईडो के ठीक नहीं होने से कई हादसें हो चुके है। इसको लेकर कई बार लोगों ने शिकायतें और आंदोलन भी किए। इस बार फिर डिगांव चौपाटी पर लोगों ने चक्काजाम किया। इसके बाद मौके पर तहसीलदार रोहित सिंह राजपूत पहुंचे। उन्होंने लोगों से बात की और सात दिन में सड़क को सुधारने का आश्वासन दिया। इधर लोगों ने मांग की कि सात दिन तक यहां टोल भी नहीं लिया जाए।

मंदसौर से सीतामऊ मार्ग की जर्जर हालत और आए दिन हो रही दुर्घटनाओं को लेकर ग्रामीणों ने शुक्रवार को केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी के नाम एक ज्ञापन सौंपा। यह ज्ञापन डिगांवमाली में सौंपा गया, जिसमें ग्रामीणों ने मार्ग की खराब स्थिति पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए तत्काल सुधार की मांग की। ग्रामीणों ने ज्ञापन में उल्लेख किया कि यह टोल रोड वर्ष 2011 में एमपीआरडीसी के अनुबंध के तहत डीबीएल प्राइवेट लिमिटेड द्वारा बनाया गया था। लेकिन, पिछले कुछ वर्षों से इस मार्ग पर ट्रैफिक का दबाव अत्यधिक बढ़ जाने के बावजूद न तो उचित मरम्मत की जा रही है न ही सड़क की नियमित सफाई हो रही है।

बरसात के मौसम में सड़क पर कीचड़ और मिट्टी जमा हो जाती है, जिससे मार्ग पर फिसलन की स्थिति बन जाती है और दुर्घटनाएं होना आम हो गया है। ग्रामीणों का आरोप है कि कंपनी द्वारा नियमित रूप से टोल टैक्स वसूला जा रहा है। लेकिन, सड़क की देखरेख में घोर लापरवाही बरती जा रही है। न तो संकेतक बोर्ड लगाए गए हैं न ही पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था की गई है। इसके चलते कई बार वाहन फिसलने से गंभीर हादसे हो चुके हैं।

ज्ञापन में यह रखी मांग...

* सड़क के दोनों ओर समुचित मात्रा में मुर्रम डलवाया जाए। * सभी आवश्यक दिशा सूचक एवं चेतावनी बोर्ड लगाए जाएं। * टोल कंपनी की लापरवाही के लिए उस पर विधि सम्मत कार्रवाई की जाए। * दुर्घटनाग्रस्त लोगों को उचित मुआवजा दिया जाए। * भविष्य में ऐसी लापरवाही न हो, इसके लिए संबंधित प्रशासनिक अधिकारियों की जवाबदेही तय की जाए।

विचार-मंथन

पाकिस्तान का चेहरा फिर बेनकाब

अमेरिका की ओर से 'द रेजिस्टेंस फ्रंट' (टीआरएफ) को वैश्विक आतंकी संगठन घोषित किए जाने के बाद अब संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की एक ताजा रपट ने इस तथ्य की सत्यता के आधार को और मजबूत कर दिया है। सुरक्षा परिषद की किसी रपट में पहली बार टीआरएफ का जिक्र किया गया है और साथ ही इस बात को भी माना है कि यह आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा का ही एक मुखौटा है। इससे न केवल आतंक के खिलाफ लड़ाई में वैश्विक स्तर पर भारत के प्रयासों को बल मिला है, बल्कि पाकिस्तान एक बार फिर दुनिया के सामने बेनकाब हुआ है। यह इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि पहलगाम हमले को अंजाम देने वाला आतंकी संगठन टीआरएफ ही था और उसने बाकायदा इसकी जिम्मेदारी भी ली थी। हालांकि, भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ने के बाद उसने किसी खास रणनीति के तहत अपना बयान वापस ले लिया था। सुरक्षा परिषद के इस कदम को भारत की कूटनीतिक सफलता के रूप में देखा जा रहा है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि भारत ने टीआरएफ के नापाक मंसूबों को दुनिया के सामने उजागर किया था और अब सुरक्षा परिषद ने भी इस आतंकी संगठन को चिह्नित कर दिया है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने पहलगाम हमले के बाद एक बयान जारी कर कहा था कि ऐसे घृणित आतंकवादी कृत्य के लिए जिम्मेदार अपराधियों, साजिशकर्ताओं, वित्तपोषकों और प्रायोजकों को न्याय के कठघरे में लाना जरूरी है। हालांकि, पाकिस्तान के दखल के कारण उस बयान में टीआरएफ का जिक्र नहीं किया गया था। पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशाक डार ने तब अपनी संसद में खुद यह दावा किया था कि उन्होंने सुरक्षा परिषद के बयान से टीआरएफ का नाम हटवा दिया है। दरअसल, पाकिस्तान की पहले से यह रणनीति रही है कि उसकी धरती पर फैल रहे आतंक के वृक्ष को वैश्विक स्तर पर चिह्नित नहीं होने दिया जाए। अब सुरक्षा परिषद की इस रपट में टीआरएफ का नाम आना यह साबित करता है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पाकिस्तान की सच्चाई सामने आ रही है। साथ ही यह इस बात का भी संकेत है कि दुनिया आतंकवाद को लेकर पाकिस्तान के दावों को किस नजरिए से देखती है। रपट में एक देश के उन दावों को भी खारिज कर दिया गया है कि लश्कर-ए-तैयबा निष्क्रिय हो चुका है। माना जा रहा है कि वह देश संभवतः पाकिस्तान ही है, क्योंकि यह बात छिपी नहीं है कि लश्कर-ए-तैयबा उसकी धरती पर ही फल-फूल रहा है। रपट में साफ कहा गया है कि पहलगाम आतंकी हमला लश्कर-ए-तैयबा के समर्थन के बिना संभव नहीं था और टीआरएफ तथा लश्कर-ए-तैयबा के बीच गहरे संबंध हैं। इस सब के बीच सवाल यह भी है कि क्या किसी आतंकी संगठन को वैश्विक स्तर पर चिह्नित कर देने से आतंकवाद पर अंकुश लग जाएगा? जाहिर है, इसके लिए संयुक्त प्रयासों को धरातल पर उतारना होगा और आतंकियों की पहचान कर उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई करनी होगी। इसमें दोराय नहीं कि आतंकवाद अब वैश्विक संकट बन चुका है और इससे निपटने के लिए उसकी जड़ों पर प्रहार करना जरूरी है। यह तभी संभव होगा, जब आतंकियों के साथ-साथ उनके वित्तपोषकों और प्रायोजकों को भी न्याय के कठघरे में लाया जाएगा।

हिंसक भाषा बोध के बीच भाषायी सहिष्णुता की अपील

उमेश चतुर्वेदी

आमची मराठी बोध को लेकर जारी सियासी खींचतान के बीच आए राज्यपाल के बयान को लेकर विवाद नहीं होता तो ही आश्चर्य होता। मराठी स्वाभिमान के बहाने हिंदीभाषियों से हिंसा का समर्थक रही महाराष्ट्र नव निर्माण सेना यानी मनसे हो या फिर शिवसेना-उद्धव ठाकरे, दोनों के नेता राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन के विरोध में उतर आए हैं। शिवसेना-उद्धव के प्रवक्ता आनंद दुबे ने कहा है कि मराठी महाराष्ट्र में नहीं बोली जाएगी तो क्या भूटान में बोली जाएगी। मनसे नेता संदीप देशपांडे ने कहा है कि राज्यपाल को मराठी स्वाभिमान और मराठी भाषा के अपमान में अंतर समझना चाहिए।

सीपी राधाकृष्णन भले ही तमिलभाषी हों, लेकिन मराठी गौरवबोध के बहाने जारी भाषा विवाद में हस्तक्षेप करके उन्होंने एक तरह से अपने दायित्वबोध को ही जाहिर किया है। तमिलनाडु के कोयंबटूर से दो बार लोकसभा सदस्य रहे राधाकृष्णन आपसी बातचीत में मानतेरहे हैं कि राजनीति में अखिल भारतीय व्याप्ति के लिए हिंदी का सहयोग जरूरी है। इन पंक्तियों के लेखक से कई बार उन्होंने हिंदी सिखाने की अपील की है। यह बात और है कि हिंदी के कुछ शब्दों के अलावा कुछ ज्यादा नहीं सीख पाए। तमिलनाडु के राजनीतिक हलकों में उन्हें तमिल मोदी कहा जाता रहा है। तमिलनाडु की राजनीति हिंदी के कटु विरोध के लिए जानी जाती रही है। 1968 में तमिलनाडु में हिंदी को राजभाषा बनाने के खिलाफ हिंसक आंदोलन हो चुका है। राधाकृष्णन ने उस आंदोलन की हिंसक तपिश को महसूस किया है। इसके बावजूद हिंदी सीखना उनकी चाहत रही है। हिंदी विरोध की आंच में पली-बढ़ी तमिलनाडु की एक पूरी पीढ़ी आपसी बातचीत में मानती है कि उसने क्या खोया है। वह पीढ़ी अब प्रौढ़ावस्था के उतरार्ध की ओर बढ़ रही है। वह मानती है कि अगर हिंदी विरोध की आंच से झुलसने का उसे अंदाजा होता तो हिंदी के विरोध में वह अपनी जिंदगी और अपने सपनों को होम नहीं करती। राज्यपाल ने वैसे कुछ ऐसा नहीं बोला है, जिसे तूल दिया जा सके। उन्होंने कहा है कि किसी को पीटने के बाद क्या वह तत्काल मराठी बोलने लगेगा। निश्चित तौर पर इसका जवाब ना में है। सीपी राधाकृष्णन 1998 और 1999 में लगातार दो बार कोयंबटूर से चुने गए थे। उन दिनों वे तमिलनाडु बीजेपी के अध्यक्ष भी रहे। उसी दौर की एक घटना का जिक्र उन्होंने अपने बयान में किया है। इस बयान में उन्होंने कहा है कि एक बार वे तमिलनाडु में कहीं जा रहे थे तो तमिल न बोलने के चलते कुछ हिंदीभाषी लोगों के साथ स्थानीय भाषा आंदोलनकारी मारपीट कर रहे थे। जिसके लिए उन्होंने हिंदीभाषियों से माफी मांगी और तमिल बोलने की जिद करने वाले लोगों से कहा था कि क्या उनके हाथों पिट जाने के बाद कोई तत्काल तमिल बोल पाएगा। भारत की हर भाषा का सम्मान हो, हर भाषा को बोलने वालों का सम्मान हो, इस सोच को बढ़ावा देने की जरूरत है। भारत की हर भाषा एक-दूसरे से जुड़ी है। भारत की भाषाएं आपस में बहनें हैं। इनके बहनापा को बढ़ावा देने की जरूरत है। कोई भाषा श्रेष्ठ है या कोई भाषा कमजोर है, इसकी तुलना भी बेमानी है। बहुभाषी भारत में एक कहावत पूरी शिद्दत से कही जाती है कि कोस-कोस पर पानी बदले, तीन कोस पर बानी। इसका आशय साफ है कि कुछ ही दूरी पर भाषा का स्वरूप बदल जाता है। लेकिन क्या व्यक्ति इसका व्यवहार करना छोड़ देता है,क्या कुछ दूरी पर बदली भाषा से वह घृणा करने लगता है। भाषाओं की दुनिया किसी राष्ट्र की चौहद्दी नहीं हैं कि बाड़ लगाकर उन्हें रोक दिया जाएगा, भाषाओं का समाज नदी के पाट की तरह भी नहीं है कि उनके किनारों को बांध बनाकर रोक दिया जाएगा और उसके पानी को नियंत्रित कर लिया जाएगा। दरअसल भाषाएं नदी के प्रवाह की तरह हैं। जिस तरह हर नदी का अपना प्रवाह है, उसके प्रवाह की अपनी ध्वनि है, कुछ ऐसा ही हाल हर भाषा का है। लेकिन तमिल हो या मराठी, उन्हें बेहतर मानने और बाकी भाषाओं को कमतर समझने की सोच सही नहीं है। हर भाषा उसे बोलने वाले मूल धारा के व्यक्ति के लिए उसकी अभिव्यक्ति का श्रेष्ठ साधन है। राज्यपाल के बयान का मकसद भाषाओं की दुनिया की इसी खूबसूरती से परिचित करना और उनके गौरवबोध से लोगों का परिचय कराना है। महाराष्ट्र में मराठी बोली जाए या तमिलनाडु में तमिल का व्यवहार बाकी भाषाओं की तुलना में बेहतर हो, इससे भला किसी को क्यों इनकार होगा। लेकिन मराठी और तमिल को बेहतर बताने और हिंदी को कमतर बताने की सोच को स्वीकार नहीं किया जा सकता। हिंदी ही क्यों, बाकी भारतीय भाषाओं को कमतर बताना भी उचित नहीं होगा।

भाषा को लेकर गौरवबोध होना तो ठीक है, लेकिन अपनी भाषा के गौरवबोध को कथित तौर पर स्थापित करने के लिए हिंसा का सहारा लेना या जबरदस्ती करना उचित नहीं है। ऐसा करना एक तरह से कानून-व्यवस्था का मामला बन जाता है। ऐसे में राज्यपाल का यह कहना उचित ही है कि कानून-व्यवस्था ठीक नहीं रहेगी तो निवेशक राज्य में आने से बचेंगे, निवेश घटेगा तो राज्य में उत्पादक इकाइयां कम होंगी, इससे रोजगार घटेगा और राज्य का राजस्व भी। भाषा की राजनीति को इन तथ्यों को भी समझना होगा। उसे देखना होगा कि भाषा के प्रति प्यार और स्नेह अराजकता का जरिया ना बने। भाषा को लेकर आक्रामक राजनीति करने वाले दलों को भी समझना होगा कि भाषाई स्वाभिमान के नाम पर होने वाली जबरदस्ती अंततः दूसरे पक्ष को भी उकसाती है। सोचिए, अगर हर भाषाभाषी अराजक ढंग से अपने भाषायी गौरवबोध को उभारने और उसे अभिव्यक्ति देने लगे तो क्या होगा ? अराजकता का तीव्र विस्फोट होगा और उससे अंततः राष्ट्र की नींव में सुराखें बनने लगेंगीं। जिसकी बुनियाद पर राष्ट का खड़े रह पाना कठिन होगा। महाराष्ट्र के राज्यपाल के बयान को इन संदर्भों में भी देखा और समझा जाना चाहिए। राज्यपाल ने ठीक ही कहा है कि हमें ज्यादा से ज्यादा भाषाएं सीखनी चाहिए, अपनी मातृभाषा पर गर्व भी करना चाहिए। इसे लेकर कोई समझौता भी नहीं किया जा सकता। लेकिन इसका यह भी मतलब नहीं है कि हम किसी और की मातृभाषा से नफरत करें। भाषाओं के नाम पर अराजक होने की बजाय जरूरत इस बात की है कि हम एक-दूसरे की भाषा ही नहीं, उसके समूचे अस्तित्व के प्रति सहिष्णु होना चाहिए। तुच्छ और तात्कालिक राजनीतिक फायदे के लिए भाषा के नाम पर सहिष्णुता का यह पुल एक बार टूटा तो उसे फिर से स्थापित कर पाना बेहद कठिन होगा। महाराष्ट्र के राज्यपाल के बयान को इन्हीं संदर्भों में देखा, परखा और समझा जाना चाहिए।

भारत को सटीक जवाब देने की जरूरत...

संतोष कुमार पाठक

भारत जैसे विशाल लोकतांत्रिक देश और भारतीयों के महत्व को किनारे करते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति ने बुधवार को भारतीय सामानों पर 25 प्रतिशत टैरिफ लगाने का ऐलान कर दिया। ट्रंप ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर पोस्ट कर बताया कि यह टैरिफ एक अगस्त से लागू होगा। हालांकि अभी तक यह स्पष्ट नहीं है कि अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा घोषित 25 प्रतिशत टैरिफ पहले घोषित 10 प्रतिशत टैरिफ के अतिरिक्त होगा या उसी में समाहित होगा। क्योंकि ट्रंप ने इससे पहले 2 अप्रैल को भारत सहित कई देशों पर 10 प्रतिशत टैरिफ लगाने की घोषणा कर दी थी,जिसे पहले 90 दिनों तक और फिर बाद में एक अगस्त तक के लिए टाल दिया गया था। ट्रंप ने टैरिफ का यह ऐलान एकतरफा तरीके से करके अपने इरादों को जाहिर कर दिया है। जबकि टैरिफ और व्यापारिक रिश्तों पर भारत और अमेरिका के अधिकारी पिछले कई महीनों से चर्चा कर रहे हैं और छठे दौर की बातचीत के लिए अमेरिकी दल के 25 अगस्त को भारत आने का कार्यक्रम पहले ही तय हो चुका है। भारत सरकार ने ट्रंप के इस टैरिफ वॉर पर फिलहाल संतुलित प्रतिक्रिया ही दी है। भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने बुधवार को बयान जारी कर कहा, सरकार ने द्विपक्षीय व्यापार के विषय पर अमेरिकी राष्ट्रपति के बयान का संज्ञान लिया है। सरकार इसके संभावित प्रभावों का अध्ययन कर रही है। भारत और अमेरिका पिछले कुछ महीनों से एक निष्पक्ष, संतुलित और पारस्परिक रूप से लाभकारी द्विपक्षीय व्यापार समझौते पर बातचीत कर रहे हैं। हम इस उद्देश्य के लिए प्रतिबद्ध हैं। भारत के बयान में आगे कहा गया है, सरकार भारत के किसानों, उद्यमियों और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों के कल्याण और हितों को सर्वोच्च महत्व देती है। राष्ट्रहित में सरकार सभी आवश्यक कदम उठाएगी, जैसा कि हाल ही में ब्रिटेन के साथ हुए समझौते सहित अन्य व्यापार समझौतों में किया गया है। भारत की इस संतुलित प्रतिक्रिया को कूटनीतिक और वैश्विक रिश्तों के लिहाज से भले ही महत्वपूर्ण माना जा रहा हो लेकिन ट्रंप के रुख को देखते हुए भारत पर उसी भाषा में जवाब देने का दबाव भी बढ़ता ही जा रहा है। क्योंकि भारत पर टैरिफ और जुर्माना लगाने की घोषणा के बाद डोनाल्ड ट्रंप ने पाकिस्तान के साथ मिलकर तेल के एक बड़े भंडार को विकसित करने की भी घोषणा कर दी है। इतना ही नहीं ट्रंप ने इशारों-इशारों में यह कहने की भी कोशिश की है कि आने वाले समय में भारत पाकिस्तान से तेल खरीद सकता है। वर्ष 2030 तक भारत और अमेरिका के द्विपक्षीय व्यापार को 500 बिलियन डॉलर तक ले जाने के लिए हो रही बातचीत के बीच अमेरिकी राष्ट्रपति के ये दोनों ऐलान काफी चौंकाने वाले हैं और उनके इरादों को स्पष्ट भी करते हैं। ट्रंप को यह बखूबी पता है कि व्यापारिक रिश्ते अपनी जगह है लेकिन भारत दुनिया के किसी भी अन्य देश को अपनी विदेश नीति तय करने का अधिकार नहीं दे सकता है। भारत हर हाल में अपनी स्वतंत्र विदेश नीति पर चलने की कोशिश करेगा और अमेरिका किसी भी हालत में भारत को यह आदेश देने में कभी भी सक्षम नहीं हो पाएगा कि हम उसके आधार पर अपनी विदेश नीति तय करें। भारत में सरकारें बदलने के बावजूद विदेश नीति में एक प्रकार की निरंतरता ही रही है। भारत रूस जैसे भरोसेमंद देश के साथ अपनी दोस्ती अमेरिका जैसे देश के लिए तो कतई नहीं छोड़ सकता है। रूस की बजाय पाकिस्तान से तेल खरीदने की ट्रंप की नसीहत भी भारत के लिए सही नहीं है क्योंकि आतंकवाद फैलाने वाले देश पाकिस्तान पर तो भरोसा किया ही नहीं जा सकता। ऐसे में निश्चित तौर पर , भारत सरकार पर अमेरिका को उसी की भाषा में जवाब देने का दबाव बढ़ता जा रहा है। ध्यान देने वाली बात है कि, चीन सहित दुनिया के कई देशों ने डोनाल्ड ट्रंप को उन्हीं की भाषा में जब जवाब दिया तो उन्हें पीछे हटना पड़ा। अमेरिका में रह रहे जिन भारतवंशियों के वोट पर ट्रंप राष्ट्रपति बने हैं,उन दबाव समूहों का भी इस्तेमाल करने का सही वक्त आ गया है। आज भारत भी अमेरिका की घरेलू राजनीति को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। लेकिन इस जवाबी कार्रवाई के लिए भारत में राजनीतिक एकता की भी जरूरत है। इसलिए समय की मांग है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कांग्रेस समेत देश के सभी महत्वपूर्ण राजनीतिक दलों से बात कर एक साझी जवाबी रणनीति बनाए।

कलेक्टर नहीं तो थानेदार को बुला

हमारा घर कालोनी की मुख्य सड़क पर है ।वैसे तो सभी मकानों के आगे भी कानूनी रूप से सड़कें हैं । अंतर बस, उनकी चौड़ाई, उनके सामने के गड्ढों की संख्या और गहराई का है । कई दिनों से हमारे घर के सामने की सड़क के सभी खंभों की लाइटें नहीं जल रही थीं । कई संदर्भ निकालकर, कई बार फोन करने और विनम्र मेसेज करने के बाद आज कोई पाँच बजे शाम को दो सज्जन एक सीढ़ी के साथ अवतरित हुए और तारों को फिर से जोड़ा और चले गए ।

अब हम तमसो मा ज्योतिर्गमय के भाव से हर दस-पाँच मिनट में खंभे पर लगी लाइट को ब्रज की गोपियों की तरह मथुरा से आने वाली राह या मोदी जी के अच्छे दिनों की तरह अपलक निहार रहे थे ।आए या न आए । पता नहीं कब आ जाए । इस ऊहापोह में समय का पता ही नहीं चला कि कब अँधेरा हो गया ।तभी हमारे बगल से एक दबंग आवाज आई- भगत, आज भोले की काँवड़ का रात्रि-विश्राम तेरे यहीं होगा। हम चौंककर गिरते गिरते बचे । देखा, भगवा वस्त्रों में लिपटी कोई पाँच फुट की एक आकृति हमारे बगल में खड़ी है । कोई भयंकर, खूँख्वार नहीं लेकिन काँवड़िया तो है । वह प्राणी जिस पर कोई नियम-कानून लागू नहीं होता । जिनके लिए देश के राजमार्ग खाली करवा दिए गए हैं । जो कहीं भी किसी भी ढाबे में खाना खाकर, प्याज का बहाना बनाकर पैसा नहीं देते, काँवड़ से कुछ छू जाने पर क्रोधित होकर किसी की भी कार तोड़ देते हैं, जिनके साथ दहाड़ते हुए डी जे चलते हैं और रात को मनोरंजन के लिए मैथुनी नृत्य करती पेशेवर नचनियाँ चलती हैं । रास्ते में मुख्यमंत्री, जिलाधीश, पुलिस अधीक्षक पुष्प बरसाते हैं। कई पुलिसवाले रास्ते में विश्राम स्थलों पर इनकी चरण-सेवा करते हैं । दिल्ली सरकार ने इनकी सेवा में भंडारे और विश्राम-शयन की व्यवस्था करने वाली संस्थाओं को दस लाख तक का अनुदान भी देती है । काँवड़ियों की पराक्रम कथाओं को सुन सुनकर हम दूर बैठे भी काँपते रहते हैं । एक बार तो मन हुआ कि जल्दी से भागकर घर में घुस जाते हैं । फिर सोचा- एक ही आदमी तो है । और वह भी मरियल सा । रात को पड़ा रहेगा बरामदे में । सुबह की बची दो रोटियाँ और थोड़ा-सा दूध देंगे । इसके साथ एक फ़ोटो खिंचवाकर कल के अखबार में दे आएंगे । 'काँवड़ियों की सेवा करते केन्द्रीय विद्यालय के सेवा निवृत्त एक 83 वर्षीय उत्साही धर्मपरायण वृद्ध सज्जन रमेश जोशी । क्या पता इस बार के नगर परिषद के चुनावों में वार्ड मेम्बरी के लिए भाजपा का टिकट ही मिल जाए । इस समय देश की राजनीति में राजस्थान की प्रतिभाओं का जलवा है । एक साथ तीन विभूतियाँ- जिनकी आकृति और शब्द-शब्द से बौद्धिकता टपकती है । ओम बिरला, जगदीप धनखड़ और अर्जुन राम मेघवाल । क्या पता अपनी विनम्रता के बल पर जब धनखड़ जी राष्ट्रपति बन जाएँगे तो हमें इस काँवड़ सेवा और राजस्थान का होने के कारण उपराष्ट्रपति बना दिया जाए । हमने कहा- भोले, विराजें । हम आपके लिए दूध-रोटी लाते हैं । यहीं दरी बिछा देते हैं, यहीं बरामदे में विश्राम कर लें और सुबह आपको जहाँ जाना हो प्रस्थान करें । अब तो भगवा वस्त्रों में लिपटी वह लघु आकृति क्रोधित हो गई, बोली- हमें क्या आलातू-फालतू समझ रखा है । जब से तेरी गली में घुसे हैं न कोई पुष्प वर्षा, न स्वागत के लिए कोई जिलाधीश, न पुलिस अधीक्षक और न ही चरण सेवा के लिए कोई पुलिस वाला । न हो तो पास के औद्योगिक क्षेत्र थाने से ही किसी थानेदार को ही पकड़ ला । हमने कहा- भोले, यू पी की बात और है । यहाँ तो धर्म की ध्वजा फहरा रही है । भले ही कानून व्यवस्था के लिए पुलिस हो न हो लेकिन काँवड़ियों के लिए 27 हजार पुलिस बल ड्यूटी पर डटा हुआ है । हमारे कहने से थानेदार तो दूर, गली में झाड़ू लगाने वाला भी काम नहीं करता । वैसे पुण्य का काम है, दो हाथ हम ही लगा देते लेकिन क्या बताएं भोले, हमारे तो खुद की कमर और घुटनों में दर्द रहता है।

आज का राशिफल

मेष

वृषभ

मिथुन

कर्क

सिंह

कन्या

तुला

वृश्चिक

धनु

मकर

कुंभ

मीन

सुडोकू पहेली क्रमांक-5678

8		3		1	6			
	9	1					6	
2	6	4						
			4	6			7	2
	7			3			5	
4	3			5	2			
						1	8	5
	8					7	4	
			1	7		2		3

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सुडोकू पहेली क्र. 5677

8	3	6	9	5	7	1	2	4
2	7	1	3	8	4	9	6	5
5	9	4	1	2	6	8	7	3
3	2	7	4	6	1	5	9	8
9	1	8	5	7	3	6	4	2
6	4	5	2	9	8	7	3	1
7	6	2	8	4	5	3	1	9
1	8	9	7	3	2	4	5	6
4	5	3	6	1	9	2	8	7

वर्ग पहेली 5678

संकेत: बाएं से दाएं

1. 1998 को यहां अफ्रीका ने वेस्टइंडीज को हराकर क्रिकेट का मिनी वल्र्ड कप जीता (2)
3. भारत में पहला भाप इंजन पश्चिम बंगाल में स्थित यहां के रेल कारखाने में 1950 को बनाया गया (5)
7. पूंछ, दुम, संपूर्ण जाति का शुद्ध स्वरों का एक राग (2)
8. शुभारंभ, सामना (3)
9. घी की संख्या, निधन, मृत्युदेव (2)
10. नया आया हुआ (4)
12. जल की बूंद, राजस्थान का एक शहर (3)
13. अगर ऐसा न होगा तो (2)
14. पुरुष, मर्द (2)
15. निडर, बाउम्मीद, निश्चलतापूर्वक (3)
17. किसी नगर-कस्बे आदि का प्रवेश स्थल (2)
19. जल, बुनियाद, आदि कारण (2)
22. सहयोग, सहायता, इमदाद (3)
24. जो किया जाए, कर्म, क्रिया (2)
25. अज्ञात, अप्रसिद्ध (4)
26. माता सरस्वती का एक नाम (3)

ऊपर से नीचे

1. इत्तलापूरक, अधोगामी, हलचल (2)
2. कामचोरी करना (6)
3. दीपक, दीया (3)
4. पुरानी फिल्मों के प्रसिद्ध पार्श्वगायक (7)
5. भारतीय स्वतंत्रता सेनानी जो लोकनायक नाम से भी जाने गए (सिर्फ आखिरीनाम)(5)
6. हल्का गीला, अधिक आई (2)
11. प्रहार, हमला करने की क्रिया (2)
12. दुश्मन (अंग्रेजी) (2)
16. नृत्य-गीत का गान, कलरव ध्वनि (2)
18. आरजू, तमन्ना, हसरत (3)
20. इस नदी का एक नाम रेवा भी है (3)
21. गतिहीन, शक्तिहीन, लंगड़ा (2)
23. काल, काल, ताकत (2)
24. हाथ, हस्त, महसूल (2)

वर्ग पहेली 5677 का हल

लं	ड	न		म	नो	हि	या
को	ल		प्र	आ	न		ई
द	ध	ट	ना		दे	य	
र	हि		मि	ल	न	सा	र
		न	का	र		सु	ख
मा	ल	वा			सु	ख	
धू		म	ईं		क		ता
का	पू	त		क	टै	ब	न

स्नातकोत्तर कक्षाओं में प्रवेश के लिए अतिरिक्त सीएलसी चरण

विद्यार्थी कल तक कर सकेंगे ऑनलाइन पंजीयन, 08 अगस्त को होगा सीट आवंटन

मंदसौर, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। उच्च शिक्षा विभाग ने सत्र 2025-26 के लिए महाविद्यालयों में स्नातकोत्तर कक्षाओं में प्रवेश के लिए अतिरिक्त सीएलसी चरण के लिए समय सारणी जारी की है।

जारी समय सारणी के अनुसार, सत्र 2025-26 में स्नातकोत्तर कक्षाओं में मेजर माइनर विषयों में और मेजर एवं माइनर विषय के अतिरिक्त अन्य विषय में प्रवेश लेने के इच्छुक विद्यार्थी, 3 अगस्त तक ऑनलाइन पंजीयन/आवेदन कर सकेंगे। पंजीकृत आवेदनों के दस्तावेजों का सत्यापन 4 अगस्त तक होगा। मेजर माइनर के अलावा अन्य विषयों में आवेदन करने वाले विद्यार्थियों को साक्षात्कार के दिनांक, स्थान एवं समय की सूचना 5 अगस्त को दी जाएगी। मेजर माइनर के अलावा अन्य विषयों में आवेदन करने वाले विद्यार्थियों के साक्षात्कार एवं पोर्टल पर पात्रता की प्रविष्टि 6 से 7 अगस्त तक होगी। विद्यार्थियों को महाविद्यालयों में सीट का आवंटन 8 अगस्त को होगा। आवंटित महाविद्यालय में प्रवेश शुल्क का भुगतान 8 से 14 अगस्त तक किया जा सकेगा। आवंटित महाविद्यालय में शुल्क भुगतान की अंतिम तिथि तक प्रवेश शुल्क का भुगतान किए गए आवेदकों का ही प्रवेश मान्य होगा और प्रवेश शुल्क का भुगतान न होने की अवस्था में प्रवेश मान्य नहीं माना जाएगा। यह भी स्पष्ट किया गया है कि विद्यार्थियों के लिए प्रवेश के लिए यह अन्तिम चरण होगा।

एनसीटीई पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए द्वितीय अतिरिक्त चरण 4 अगस्त तक होंगे ऑनलाइन पंजीयन–उच्च शिक्षा विभाग ने शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिये एनसीटीई पाठ्यक्रम संचालित करने वाले शासकीय, अनुदान प्राप्त अशासकीय और अशासकीय महाविद्यालयों में प्रवेश के लिए द्वितीय अतिरिक्त चरण की समय सारणी जारी की है। जारी समय सारणी के अनुसार, एनसीटीई पाठ्यक्रमों में प्रवेश में लिए विद्यार्थी 4 अगस्त तक ऑनलाइन पंजीयन/आवेदन कर सकेंगे। पंजीकृत आवेदनों के दस्तावेजों का सत्यापन 6 अगस्त तक होगा। मेरिट सूची का प्रकाशन 7 अगस्त को होगा। विद्यार्थियों के लिए 8 अगस्त को सीट आवंटन जारी किया जाएगा। आवंटित हेल्प सेंटर पर मूल दस्तावेजों, टीसी माइग्रेशन के साथ भौतिक सत्यापन के लिए विद्यार्थियों को उपस्थित होकर 8 से 13 अगस्त तक लिंक इनिशिएट कराना होगा। विद्यार्थियों को आवंटित महाविद्यालय में प्रवेश शुल्क का भुगतान 8 से 14 अगस्त तक करना होगा। आवंटित महाविद्यालय में शुल्क के भुगतान की अंतिम तिथि 14 अगस्त है। प्रवेश शुल्क का भुगतान किए गए आवेदकों का ही प्रवेश मान्य होगा। यह भी स्पष्ट किया गया है कि विद्यार्थियों के प्रवेश के लिए यह अन्तिम चरण होगा।

स्नातक कक्षाओं में प्रवेश के लिए अब 14 अगस्त तक होगा अतिरिक्त सीएलसी चरण–उच्च शिक्षा विभाग ने प्रदेश के शासकीय, अनुदान प्राप्त अशासकीय और निजी अशासकीय महाविद्यालयों में शैक्षणिक सत्र 2025-26 स्नातक कक्षाओं में प्रवेश के लिये अतिरिक्त सी.एल.सी चरण की तिथि में वृद्धि की है। अब 14 अगस्त तक अतिरिक्त सीएलसी चरण जारी रहेगा, पूर्व में यह तिथि 31 जुलाई निर्धारित थी।

कलेक्टर ने इंटेक वेल का निरीक्षण कर प्रगति का जायजा लिया

नीमच, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर श्री हिमांशु चंद्रा ने नीमच जिले की रामपुरा तहसील के ग्राम सालारामाला में गांधी सागर जलाशय के बैक वॉटर में लगभग 1 किलोमीटर पानी में निर्माणाधीन अस्थाई रॉ वाटर इंटेक वेल, पंप हाउस और अप्रोच ब्रिज का निरीक्षण किया और निर्माण कार्य की प्रगति का जायजा लिया। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को शेष निर्माण कार्य तेजी से पूर्ण करवाने के निर्देश दिए।

महाप्रबंधक जल निगम ने कलेक्टर को अवगत कराया, कि वर्तमान में पानी गांधी सागर से खिमला स्थित जल शोधन संयंत्र एवं खिमला से कुकडेश्वर तक पहुंच चुका है एवं उसके आगे टेस्टिंग कार्य प्रगतिरत हैं। अपरोक्ष ब्रिज एवं स्थाई इंटेक वेल पंप हाउस का कार्य नवंबर माह तक पूर्ण हो जाएगा और गांधी सागर समूह जलप्रदाय योजना से उक्त कार्य पूर्ण होने के बाद हर घर नल से जल प्रदाय प्रारंभ कर दिया जाएगा। इस मौके पर एसडीएम श्री पवन बारिया, जनपद सीईओ श्री आरीफ खान, जल निगम के महाप्रबंधक श्री जितेन्द्र बिजोरिया, डीबीएल के सहायक प्रबंधक श्री सुनील तोमर, श्री सरस जैन व अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

सही आवाज उठाने पर सामाजिक कार्यकर्ता पर दमनात्मक कार्यवाही क्यों..?

भाजपा के शासन में अंग्रेजों की तरह बर्ताव कर रहे हैं अफसर, बंसल ने उठाया मुद्दा

मंदसौर, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। देश भले ही आजाद हो गया है लेकिन अभी भी अफसरशाही पर पूरी तरह से अंग्रेजियत मानसिकता हावी है। सामाजिक कार्यकर्ता मनीष भावसार को प्रशासन द्वारा नोटिस देना और 1 लाख रु. का बॉन्ड भरवाना अत्यंत ही दुर्भाग्यपूर्ण है।

ये विचार पार्षद व समाजसेवी सुनील बंसल ने एक वक्तव्य में व्यक्त किए हैं। उन्होंने कहा कि हमारी धर्म संस्कृति के संरक्षण के लिए यदि कोई भी सामाजिक कार्यकर्ता कोई आवाज उठाता है तो उसे इस तरह से दबाना उस पर कार्यवाही करना और वह भी उस कार्यकर्ता पर जो हिंदुत्व की विचारधारा को आगे बढा रहा है। मंदसौर से लेकर भोपाल और दिल्ली तक में इसी विचारधारा की सरकार है फिर भी ये अफसरशाही हिंदुओं के ही दमन पर आमादा है। श्री बंसल ने कहा कि मनीष भावसार ने भगवान श्री पशुपतिनाथ की शाही सवारी का मार्ग पूर्ववत रखने की मांग ही तो की है कोई ऐसा गुनाह नहीं कर दिया कि उनके खिलाफ ऐसी सख्त कार्यवाही की जाए या करवाई जाए। यदि इसी तरह सामाजिक कार्यकर्ताओं पर कार्यवाहियां होती रही तो क्या भविष्य में कोई भी व्यक्ति या कार्यकर्ता उचित आवाज उठाने का भी हकदार नहीं रहेगा। प्रशासनिक अधिकारी पूरी तरह से अंग्रेजी शासन जैसी क्रूर मानसिकता रखते हैं यह अत्यंत ही निंदनीय है। श्री बंसल ने जनप्रतिनिधियों से इस मामले में हस्तक्षेप करने की मांग की है और प्रशासन को भी आगाह किया है कि इस तरह की दमनात्मक कार्यवाही से बाज आए अन्यथा एक बड़ा जनआंदोलन मंदसौर में खड़ा हो जाएगा। उन्होंने यह भी मांग की है कि भगवान पशुपतिनाथ की शाही सवारी पूरी तरह से पूर्ववत मार्ग से निकलनी चाहिए और जो कार्यवाही मनीष भावसार के ऊपर की गई है वह वापस ली जाए। खानपुरा की जिस नवनिर्मित पुलिया को लेकर प्रशासन अड़ंगे लगा रहा है इससे यह भी साफ होता है कि निर्माण कार्यों में घटिया मटेरियल और भ्रष्टचार को भी अप्रत्यक्ष रूप से प्रशासन स्वीकार कर रहा है। मानो अधिकारियों को यह मालूम है की नई पुलिया के निर्माण में जिस तरह का भ्रष्टाचार किया गया है उससे वह निश्चित ही कमजोर बनी है और सवारी यदि उस पुलिया पर से निकलेगी तो कोई हादसा हो सकता है यह प्रशासन की भ्रष्टाचार को लेकर एक तरह से स्वीकारोक्ति है।

मां के नाम पौधा रोपण कर मंदसौर टेंट ऑनर्स एसोसिएशन की कार्यकारिणी का गठन

मंदसौर, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। शुक्रवार को फेडरेशन ऑफ एम पी टेंट एसोसिएशन से संबंधित मंदसौर टेंट ऑनर्स एसोसिएशन का स्नेही मिलन समारोह आयोजित हुआ। इस दौरान संगठन के समस्त व्यापारियों ने हरित क्रांति के रूप में एक पौधा मां के नाम कार्यक्रम का आयोजन करते हुए पौधा रोपण किया। साथ ही नवीन कार्यकारिणी का गठन भी किया गया। इस दौरान फेडरेशन ऑफ एमपी के कई वरिष्ठ पदाधिकारी भी मौजूद रहे।

संगठन के नवीन मीडिया प्रभारी और प्रवक्ता प्रीत शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि, शुक्रवार को मंदसौर के सुंदरम वाटिका में मंदसौर टेंट ऑनर्स एसोसिएशन की नवीन कार्यकारिणी का गठन किया गया। कार्यकारिणी गठन से पूर्व हरित क्रांति के उद्देश्य को लेकर 'एक पौधा मां के नाम' कार्यक्रम के तहत संगठन के समस्त व्यापारी साथियों ने पौधारोपण किया। कार्यक्रम के शुरुवात में पूर्व में दिवंगत हुए संगठन के वरिष्ठों और उनके परिवारजनों को दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। जिसके बाद प्रदेश स्तर के पदाधिकारी एवं मार्गदर्शक मंडल के मनोहरलाल सोनगरा ने सभी व्यापारियों को संबोधित किया। साथ ही संगठन के वरिष्ठों को माला पहनाकर उनका सम्मान भी किया गया। इसके पश्चात फेडरेशन ऑफ एमपी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष चंद्रशेखर निगम एवं प्रदेश सचिव सत्यनारण अग्रवाल ने संगठन के समस्त पदाधिकारियों को संबोधित करते हुए साथियों के सामने मंदसौर टेंट ऑनर्स एसोसिएशन के नवीन अध्यक्ष के रूप में संतोष शर्मा का नाम रखा। जिनके नाम पर समस्त व्यापारियों ने सहमति प्रदान करते हुए उन्हें सर्वसहमति से अध्यक्ष चुना। इस दौरान नवीन कार्यकारिणी में उपाध्यक्ष की भूमिका आबिद मेव को दी गई। वहीं संगठन का विस्तार करते हुए महासचिव गोपाल माली, दीपक रामावत, कोषाध्यक्ष दीपक बैरागी, सचिव मनीष सेंगर एवं ब्रजेश सिसोदिया को बनाया गया। वहीं संगठन मंत्री की जिम्मेदारी गोविंद माली, चमन माली, प्रचार मंत्री सोनू शर्मा, गोपाल कुमावत, राहुल कुमावत को दी गई। साथ ही शेष बचे समस्त व्यापारियों को कार्यकारिणी सदस्य बनाया गया। इस दौरान मंदसौर सहित आसपास क्षेत्र के समस्त टेंट, केटर्स, लाइट और स्टेज फ्लावर डेकोरेशन के व्यापारी मौजूद रहे। इस दौरान पूर्व अध्यक्ष सुनील पालीवाल को शाल श्रीफल देकर उनको सफलतम कार्यकाल की बधाई दी गई। कार्यक्रम के अंत में आभार फेडरेशन ऑफ एमपी टेंट एसोसिएशन के प्रदेश सह सचिव विष्णु खींची ने माना।

कलेक्टर ने दो नवीन शव वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया

मंदसौर, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर श्रीमती अदिती गर्ग ने जिला चिकित्सालय मंदसौर से दो नवीन शव वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। मध्य प्रदेश शासन द्वारा जिले को दो अत्याधुनिक शव वाहन दिए गए हैं। अब जिले में शव परिवहन के लिए कोई शुल्क नहीं लगेगा। ये दोनों शव वाहन जिले के सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों, जैसे जिला चिकित्सालय और अन्य अस्पतालों में, किसी मरीज की मृत्यु होने पर उनके पार्थिव शरीर को उनके घर या श्मशान घाट तक सम्मानपूर्वक और नि:शुल्क पहुंचाने की सुविधा प्रदान करेंगे।

इस अवसर पर, कलेक्टर श्रीमती अदिती गर्ग ने कहा, 'यह जनहित में एक महत्वपूर्ण पहल है। यह सेवा उन परिवारों के लिए बहुत मददगार होगी। जिन्हें दु:ख की घड़ी में शव परिवहन के लिए परेशानियों का सामना करना पड़ता था।' उन्होंने यह भी बताया कि यह सुविधा मध्य प्रदेश सरकार की स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है और मंदसौर जिले के लोगों के लिए एक बड़ी राहत है। यह नई सेवा जिला चिकित्सालय सहित अन्य सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में दिवंगत हुए रोगियों या दुर्घटना पीड़ितों के पार्थिव शरीर को सम्मान के साथ उनके गंतव्य तक पहुंचाएगी। शुभारंभ अवसर पर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. गोविंद सिंह चौहान, सिविल सर्जन डॉ. बी. एल. रावत, जिला कार्यक्रम प्रबंधक श्री निलेश गर्ग, जिला चिकित्सालय के चिकित्सक, पत्रकार मौजूद थे।

कलेक्टर ने विश्व स्तनपान सप्ताह का शुभारंभ किया

मंदसौर, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर श्रीमती अदिती गर्ग ने जिला चिकित्सालय मंदसौर में एक कार्यशाला के साथ विश्व स्तनपान सप्ताह का शुभारंभ किया। यह सप्ताह 7 अगस्त तक मनाया जाएगा। इसका मुख्य उद्देश्य नवजात शिशुओं के लिए स्तनपान के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना है।

कलेक्टर ने माताओं और परिजनों को किया जागरूक– कार्यशाला में कलेक्टर श्रीमती अदिती गर्ग ने प्रसूता महिलाओं और उनके परिजनों से सीधी बातचीत की और स्तनपान के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि जन्म के बाद 6 महीने तक शिशु के लिए मां का दूध ही सबसे अच्छा और संपूर्ण आहार होता है। उन्होंने सभी से अपील करते हुए कहा कि 6 महीने पूरे होने के बाद ही बच्चों को मां के दूध के साथ ऊपरी आहार देना शुरू करें। इसके अलावा, कलेक्टर ने बच्चों के पूर्ण टीकाकरण को भी सुनिश्चित करने की बात कही ताकि वे स्वस्थ और सुरक्षित रहें। भ्रांतियों को दूर करने पर जोर दिया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. गोविंद सिंह चौहान ने बताया कि इस सप्ताह का आयोजन स्तनपान से जुड़ी भ्रांतियों को दूर करने और सही जानकारी फैलाने के लिए किया गया है। कलेक्टर ने गंभीर कुपोषण से निपटने के लिए मंदसौर के 20-बेड वाले छठ्ठ (पोषण पुनर्वास केंद्र) को बढ़ाकर 50 बेड करने के निर्देश दिए हैं। लघु नाटिका के माध्यम से डॉ. प्रियांशी जैन और नर्सिंग स्टाफ ने स्तनपान से जुड़ी गलतफहमियों को दूर किया और महत्वपूर्ण जानकारी दी। इस अवसर पर सुंदरलाल पटवा मेडिकल कॉलेज की डीन डॉ शशी गांधी, महिला रोग विशेषज्ञ डॉ संगीता पाटीदार, शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ प्रकाश कारपेंटर और अन्य चिकित्सा विशेषज्ञ तथा नर्सिंग स्टाफ उपस्थित थे।

विश्व स्तनपान सप्ताह का शुभारंभ कर प्रसूताओं को परामर्श दिया

नीमच, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। जिला चिकित्सालय नीमच के प्रसूति विंग एवं नवजात शिशु गहन चिकित्सा ईकाई में विश्व स्तनपान सप्ताह का शुभारंभ जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ.. बी.एल.सिसोदिया, एस.एन.सी.यू. प्रभारी प्रशांत राठौर ने किया। डॉ. प्रशांत राठौर ने बताया कि इस वर्ष की थीम :- स्तनपान मे निवेष करे, भविष्य में निवेश करे रखी गई है। अर्थात यदि माताए स्तनपान करवाकर अभी इसमें निवेश करेंगे तो बच्चों का भविष्य सुनहारा होगा।

इस अवसर पर डॉ. राठौर ने बताया कि जन्म के तुरंत बाद स्तनपान करवाने से बच्चें को अमृत समान दृव्य प्राप्त होता है जिसे कोलेस्ट्रम कहते है यह कोलेस्ट्रम बच्चें को जीवन भर विभिन्न बिमारियों से बचाता है। स्तनपान से न सिर्फ शिशु बल्कि माता को भी फायदा है, शीघ्र स्तनपान से प्रसूता की आंवल जल्द् बाहर आ जाती है तथा रक्तस्त्राव कम होता है। डॉ. राठौर ने बताया कि एस.एन.सी.यू. के स्तनपान कक्ष में प्रति दिवस अलग अलग विषय पर माताओं को परामर्श दिया जाता है, साथ ही कंगारू मदर केयर के बारे में भी समझाईश दी रही है। डॉ. बी.एल. सिसोदिया ने बताया कि मातृ मृत्यु एवं शिशु मृत्यु कम करने के लिए विभिन्न गतिविधियो का संचालन किया जा रहा है इसी कडी में विश्वं स्तनपान सप्ताह के तहत स्तनपान को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न प्रचार प्रसार गतिविधियो का आयोजन किया जा रहा है। वर्तमान मे दस्तक अभियान भी संचालित किया जा रहा है इस अभियान के तहत् घर घर भ्रमण के दौरान आशा एवं आगंनवाडी कार्यकर्ता द्वारा नवजात एंव 2 वर्ष तक के बच्चों को स्तनपान एवं पूरक पोषण आहार के साथ ही 2 वर्ष से अधिक वर्ष के बच्चों को पूर्ण आहार से संबन्धित परामर्श दिया जा रहा है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. आर.के खद्योत ने फील्ड के सभी कर्मचारियों को निर्देशित किया है, कि वे दस्तक अभियान की गतिविधियों के दौरान स्तनपान परामर्श अवश्य प्रदान करें।

जमीनी समस्या को शासन-प्रशासन तक पहुंचाकर, जनकल्याण हेतु समर्पित है पत्रकार-छलोत्रे

मनासा, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। वर्तमान समय मे वाकई में पत्रकारों को कठिन समय से गुजरना पड रहा है। पत्रकारों की संख्या नगरीय क्षेत्र के इर्द गिर्द तक ही सीमित रह गई है। दूर दराज ग्रामीण क्षेत्र में पत्रकारों का अभाव है। जमीनी समस्या को शासन प्रशासन तक पहुंचाकर, जनकल्याण हेतु समर्पित है पत्रकारगण, पत्रकारों के हितों में शासन प्रशासन को भी गम्भीरता से विचार करना चाहिए, उक्त बात टप्पा कार्यालय कुकडेश्वर के नायाब नवीन छलोत्रे ने 'तहसील प्रेस क्लब-मनासा रामपूरा' द्वारा आयोजीत मंगल वाटिका कुकडेश्वर ने पत्रकार मिलन समारोह में कहि।

वंही कुकडेश्वर पुलिस थाना प्रभारी भीमसिंह सिसोदिया ने बताया कि पुलिस व पत्रकार परस्पर एक दूसरे के सहयोग से जनसेवा करते है। पत्रकार आमजन के बीच मे रहकर, जन हितेषी विषयो को उठाते है। वही पत्रकार व वर्तमान में जनपद सदस्य प्रतिनिधि घीसालाल जाट ने अपनी 20 वर्ष के पत्रकारिता के अनुभव व जनसेवा की भावना को अपने पत्रकार साथियों के समक्ष रखी। तहसील प्रेस क्लब मनासा रामपूरा के अध्यक्ष गोपालदास बैरागी व सचिव रमेश गुर्जर के प्रयासों से कुकडेश्वर में पत्रकार मिलन समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि नायाब तहसीलदार नवीन छलोत्रे, थाना प्रभारी भीमसिंह सिसोदिया व पत्रकार घीसालाल जाट मंचासीन थे। अतिथियो द्वारा माँ सरस्वती पूजन, अतिथीयो का स्वागत सत्कार हुआ। कार्यक्रम में प्रभुलाल सियार, कैलाश राठौर, हेमंत शर्मा, रूपेश सारू, दीनबंधु बैरागी, कमलाशंकर विश्वकर्मा, बबलू चौधरी, राकेश राठौर सहित लगभग 50 पत्रकार साथी मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन महेश मौनु मोदी ने किया। पत्रकारों ने चार सूत्रीय मांगे जिसमे पत्रकार सुरक्षा कानून बनाने, पत्रकारों का नि:शुल्क बीमा, पत्रकारों को प्रधानमंत्री आवास व भूखण्ड व पत्रकार भवन हेतु मांग पत्र, मूख्यमंत्री के नाम ज्ञापन, नायाब तहसीलदार को सोंपा गया।

आंतरी माता में संकुल स्तरीय बैठक सम्पन्न

मंदसौर, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। संकुल शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय आंतरी माताजी में संकुल स्तरीय बैठक का आयोजन संकुल प्राचार्य श्री युवराज जी चन्देल के नेतृत्व में सम्पन्न हुई। संकुल प्राचार्य श्री चन्देल ने नामांकन, मेपिंग, अपार आईडी ,विद्यालय में समय पर उपस्थिती हो ,प्रभावीशिक्षण, शिक्षक दैनिक डायरी ,मध्यान्ह भोजन,,विद्यालय भवन की व्यवस्था ,संकुल उच हेल्पलाइन रहित हो ,तथा प्राचार्य महोदय द्वारा मेंटल हेल्थ पर सम्भाग स्तर पर प्राप्त प्रशिक्षण पर आदि कई बिंदुओं पर संकुल की शासकीय/अशासकीय संस्था प्रधानो से विस्तार से चर्चा की। संकुल के कार्य और विद्यालय के शिक्षण कार्य मे गुणवत्ता लाने के लिए गत सत्र, संकुल प्राचार्य श्री युवराज जी चन्देल द्वारा समय समय पर संकुल की शासकीय/अशासकीय शालाओ का निरीक्षण एवं मूल्यांकन किया गया था। उक्त बैठक में संकुल प्राचार्य जी के द्वारा 2024-25 में श्रेष्ठ कार्य करने वाली चार 4 शालाओ को प्रशस्ति पत्र एव ईनाम संकुल केंद्र के वरिष्ठ शिक्षक श्री इ.ठ.राठौर सर,एवं संकुल के पूर्व प्रभारी प्राचार्य च.ड.चन्द्रावतजी सर के माध्यम से प्रदान किया गया। संकुल में संस्थाओ के उत्साहवर्धन यह कार्य इतिहास में पहली बार हुआ है। जिसमें शासकीय प्राथमिक विद्यालय रायसिंगपुरा, शासकीय माध्यमिक विद्यालय चपलाना, अशासकीय सरस्वती शिशु मंदिर आंतरी माता, शाइनिंग करिअर इंग्लिश स्कूल आंतरी माता को प्रशस्ति पत्र पुरस्कार प्रदान किया।

पीएम कालेज ऑफ एक्सीलेंस मंदसौर में विद्यार्थियों को नशा मुक्ति शपथ दिलाई

मंदसौर, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। पीएम एक्सीलेंस कॉलेज मंदसौर के प्राचार्य डॉ. जे.एस. दुबे ने ने बताया कि उच्च शिक्षा विभाग, म. प्र. शासन के निर्देशानुसार महाविद्यालय के रेड रिबन क्लब, यूथ रेड्क्रॉस, एनएसएस व एनसीसी इकाई के द्वारा विद्यार्थियों, एनएसएस स्वयंसेवकों एवं एनसीसी कैडेट्स को नशा से दूर रहने हेतु नशा मुक्ति शपथ दिलाई गई। उक्त शपथ के आयोजन का मुख्य उद्देश्य समाज में बढ़ती हुई मद्यपान तथा नशीली दवा, मादक पदार्थों कें दुष्परिणामों से युवाओं, विद्यार्थियों एवं समाज को अवगत कराया जाकर, नशा सेवन प्रवृत्ति की रोकथाम हेतु जनजागृति एवं चेतना निर्माण किया जाकर मध्यप्रदेश को नशामुक्त बनाना है। जिसके तहत महाविद्यालय के विद्यार्थियों को प्राचार्य डॉ. जे. एस. दुबे के मार्गदर्शन में एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डॉ. अनिल कुमार आर्य व एनसीसी अधिकारी योगेश पटेल द्वारा नशे के सेवन से दूर रहने हेतु नशा मुक्ति शपथ दिलाई। इस अवसर पर प्राचार्य जे. एस. दुबे ने विद्यार्थियों को कहा कि हमें मादक द्रव्यों का सेवन नहीं करना चाहिए। इससे हमारी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। बुद्धि के नाश होने पर नशे के सेवन करने वाले का सर्वनाश हो जाता है। रेड रिबन क्लब प्रभारी व एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डॉ. अनिल कुमार आर्य ने कहा कि नशा सभ्य समाज के लिए अभिशाप है। नशे से दूर रहने के लिए हमें दृढ संकल्प लेना होगा। एनसीसी अधिकारी योगेश पटेल ने विद्यार्थियों को मादक द्रव्यों के दुष्परिणामों के अंतर्गत स्वास्थ्य से लेकर आर्थिक हानियों को भी गिनाया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में महाविद्यालय के प्राध्यापक, कर्मचारी, विद्यार्थी, एनएसएस स्वयंसेवक एवं एनसीसी कैडेट्स उपस्थित थे।

मेघदूत नगर के महाराजा भक्तों का हाल जानने सोमवार को ठाट-बाट से निकलेंगे

मंदसौर, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। मेघदूत नगर बालाजी समिति द्वारा मेघदूत नगर स्थित श्री भूरिया महादेव मंदिर में श्रावण मास पर प्रतिदिन विशेष अभिषेक, पूजन अर्चन कर महाआरती की जा रही है। श्रावण मास के अंतिम सोमवार 4 अगस्त को दोप. 3 बजे बाबा भोलेनाथ का विशेष श्रृंगार व अभिषेक किया जाएगा तथा तत्पश्चात् शाही रथ पर सवार होकर भूरिया महादेव भक्तों का हाल जानने ठाट बाट के साथ निकलेंगे।

उक्त जानकारी देते हुए श्री भूरिया महादेव मंदिर समिति के नेमीचन्द खिमेसरा ने बताया कि चौथी बार समिति द्वारा यह भव्य आयोजन किया जा रहा है। इस शाही सवारी में नगाडे, ताशा, बैण्ड बाजे ढोल आदि शामिल होंगे। साथ ही भव्य रूप से रथ को सजाया जाएगा जिसमें भूरिया महादेव की प्रतिमा को विराजित कर क्षेत्र में शाही शोभायात्रा निकाली जाएगी। इस शाही सवारी में बड़ी संख्या में महिलाएं, पुरूष व धर्मालुजन शामिल होंगे। शाही यात्रा के समापन पर सायं 7.30 बजे भूरिया महादेव की महाआरती कर 3 क्विंटल खिचडी का भोग लगाया जाएगा जिसे भक्तों में वितरित किया जाएगा। श्री भूरिया महादेव मंदिर समिति के सभी सदस्यों एवं सभी क्षेत्रवासियों ने नगर के भोलेनाथ भक्तों से शाही सवारी में भाग लेने की अपील की है।

मंदसौर मंडी भाव

उपज	आवक बोरी में	न्यूनतम	अधिकतम
मक्का	51	2081	2321
उडद	6	4250	5300
सोयाबीन	6837	3800	4730
गैहु	8686	2550	3070
चना	269	5701	6200
मसुर	274	6600	7951
धनिया	169	5800	7331
लहसुन	15000	1901	8799
मैथी	682	3951	6381
मुंगफली	575	4000	4702
अलसी	1278	7300	7800
सरसो	333	6653	7040
तारामीरा	0000	0000	0000
इसबगोल	191	6500	11200
प्याज	6500	510	1100
कलोंजी	27	10000	20830
तुलसी बीज	6	8900	13200
डॉलर	49	7503	8401
तिल्ली	308	6402	9731
जौ	64	2400	2500
मटरसुखी	17	3100	3100
असालीया	34	5800	6111
चियाबीज	20	14001	19501

मौसमी बीमारी प्रभावित पीपलीखेड़ा में स्वास्थ्य टीम ने किया उपचार

नीमच, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। नीमच जिले के जावद विकासखंड गुरूवार को प्राप्त सूचना के अनुसार ग्राम पीपलीखेडा में खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ.राजेश मीणा ने तत्काल प्रतिबंधात्मक कार्रवाई कर आमजनों के उपचार के लिए चिकित्सा दल भेज कर घर-घर सर्वे करवाया जा रहा है। इसी कडी में एक अगस्ते 2025 को खंड चिकित्सा अधिकारी ने टीम के साथ स्वयं उपस्थित रहकर, आशा ,आंगनबाडी कार्यकर्ता ,बहुउद्देशीय स्वास्थ्य कार्यकर्ता पुरुष आदि के साथ घर-घर जाकर एवं गांव में सभी प्रभावितों को उपचार हेतु आवश्यक उपचार दिया व दवाईयाँ उपलब्ध करवाई गई। इसके साथ-साथ उनके द्वारा गांव के पेयजल स्रोतों का जल शुद्धिकरण किया गया। शासकीय कुआं ,नलकूप में जल शुद्धिकरण किया गया हैं।

इसी दौरान अनविभागीय अधिकारी जावद श्रीमती प्रीति संघवी भी उपस्थित थी। उन्होने लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग एवं जनपद सीईओ श्री आकाश धार्वे को पेयजल व्यवस्था संधारण हेतु आवश्यक निर्देश दिए एवं भविष्य में पाईपलाइन से पानी सप्लाई से पूर्व समस्त संधारण कार्य पूर्ण होने पर, ही नल जल वितरण करने के निर्देश दिए। चिकित्सा दल द्वारा ग्राम में 98 व्यक्तियों का स्वास्थ्य परीक्षण कर, उपचार किया। जिसमें पेट दर्द और दस्त के रोगी पाए, व अन्य सर्दी खांसी मौसमी बीमारी के रोगियों का उपचार किया गया। वर्तमान में ग्राम में स्थिति पूर्णतया नियंत्रण में है एवं सभी स्थिति सामान्य है, कल भी चिकित्सा दल द्वारा ग्राम में स्वास्थ परीक्षण शिविर एवं एवं घर घर भ्रमण निरंतर जारी रहेगा। यह जानकारी बी.एम.ओ.डॉ.राजेश मीना जावद ने दी है।

शिक्षा की गुणवत्ता सुधार की कलेक्टर नीमच की पहल...

कलेक्टर ने नवोदय विद्यालय रामपुरा एवं हाई स्कूल मजिरिया में विद्यार्थियों से किया संवाद

नीमच, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर श्री हिमांशु चंद्रा द्वारा नीमच जिले के शासकीय विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता सुधार के लिए विशेष पहल की जा रही है । इसके तहत कलेक्टंर समय समय पर शासकीय विद्यालयों का आकस्मिक निरीक्षण कर वे कक्षाओं में विद्यार्थियों के साथ संवाद कर शिक्षा की गुणवत्तार एवं अध्यापन कार्य का जायजा ले रहे है।

कलेक्टर श्री चंद्रा ने शुक्रवार को मनासा विकासखण्ड के हाई स्कूल मजिरिया एवं नवोदय विद्यालय रामपुरा का निरीक्षण किया। उन्होने नवोदय विद्यालय की विभिन्न कक्षाओं में छात्र-छात्राओं के साथ संवाद कर अध्यापन कार्य का जायजा लिया। साथ ही विद्यार्थियों से चर्चा कर, पाठ्यक्रम भविष्य के लिए निर्धारित लक्ष्य के बारे में पूछा और दैनिक पढाई की रणनिति के बारे में चर्चा कर, उनके शैक्षणिक स्तर को परखा। कलेक्टर श्री चंद्रा ने हाई स्कूल मजिरिया में कक्षा 11 वीं में पहुँचकर विद्यार्थियों के साथ संवाद किया और शिक्षण कार्य का जायजा लिया। कलेक्टर श्री चंद्रा ने विद्यार्थियों से कहा, कि अच्छे केरियर निर्माण के लिए कक्षा 10वीं बोर्ड की परीक्षा प्रथम पडाव हैं। अत: सभी विद्यार्थी कक्षा 10वीं में मन लगाकर अच्छी पढाई करें और अच्छे अंक हासिल कर उत्तीर्ण हो। उन्होने सभी छात्र-छात्राओं से 85 प्रतिशत से अधिक अंकों के साथ बोर्ड परीक्षाए उर्त्तीण करने का लक्ष्य- हासिल कर अच्छी पढाई करने के लिए प्रेरित किया। इस मौके पर एसडीएम श्री पवन बारिया, जिला शिक्षा अधिकारी श्री एस.एम.मांगरिया, डी पीसी श्री दिलीप व्यास एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

विश्व स्तरीय योग चैलेंज में दूसरी बार विजेता बने योग गुरु बंशीलाल टांक

मंदसौर, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। योग ऋषि स्वामी रामदेवजी द्वारा 31 जुलाई को इंडिया टीवी पर दिये गये पॉवर योगा चैलेंज (स्पर्धा) में 83 वर्षीय पतंजलि योग गुरु बंशीलाल टांक को विजेता घोषित किया गया है। इंडिया टीवी में पार्श्वदण्ड का चैलेंज दिया गया था जिसे सफलता पूर्वक प्रदर्शित करने पर श्री टांक को विजयी घोषित किया। उल्लेखनीय है कि इसके पूर्व 19 नवम्बर 2025 को भी टांक विश्व स्तरीय योग स्पर्धा में विजेता और इसके पूर्व 2 स्पर्धाओं में चयनित 6 योगियों में भी स्थान पाया है।

ग्राम भारती जिला मंदसौर का आचार्य दक्षता वर्ग संपन्न, 64 आचार्य दीदी ने लिया भाग

मंदसौर, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। ग्राम भारती द्वारा डिगांव संकुल का आचार्य दक्षता वर्ग डिगावमाली विद्यालय में आयोजित हुआ, वर्ग में संकुल के अंतर्गत आने वाले 10 विद्यालय से 64 आचार्य दीदी ने भाग लिया। उद्घाटन सत्र में ग्राम भारती उपाध्यक्ष श्री रविंद्र पाण्ड्ेय, सहसचिव श्री कैलाश रावलिया, डिगांवमाली संकुल संयोजक श्री जसपाल आंजना, डिगांवमाली विद्यालय अध्यक्ष श्री बहादुरसिंह आंजना, डिगांवमाली संकुल प्रमुख श्री कारूलाल प्रजापत मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम में अतिथि परिचय प्रहलाद मालवीय व स्वागत समरथ पाटीदार ने किया। उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता रविंद्र पाण्डेय ने समाज में किस प्रकार से शिशु मंदिर कार्य करता है, शिशु मंदिर के माध्यम से समाज प्रबोधन हेतु मनाया जाने वाले कार्यक्रम, एवं शिशु मंदिर समाज आधारित है आदि विषयों पर प्रकाश डाला।

प्रशक्षिण के भिन्न-भिन्न सत्रों में, पंचपदी, शिक्षण कौशल, छ:टूल्स, पंचकोषात्मक, पाठ योजना, रिकॉर्ड संधारण, आदि का शिक्षण कारूलाल प्रजापत, मोहन धाकड़, सत्यनारायण, मुकेश गुर्जर द्वारा शिक्षण एवम सत्यनारायण सकुनिया द्वारा शारीरिक शिक्षणसे सभी को अवगत करवाया गया। समापन सत्र में मुख्य अतिथि जिला प्रमुख महेश विश्वकर्मा, दलौदा तहसील प्रमुख मयूर सोनी, कार्यालय प्रमुख एवं प्रवासी कार्यकर्ता दलौदा श्री श्याम प्रजापत, डिगांव संकुल प्रमुख श्री कारुलाल प्रजापत, सकुनिया डिगावमाली प्रधानाचार्य श्री सत्यनारायण उपस्थित थे। जिला प्रमुख श्री विश्वकर्ता द्वारा छात्र उपस्थिति पंजिका संधारण, सतत मूल्यांकन पंजी, एवं विद्यालय विकास में आचार्य की भूमिका विषय पर प्रकाश डाला। उद्घाटन एवं समापन के समस्त अतिथि गण द्वारा आचार्य दीदी द्वारा शैक्षिक मॉडल का प्रदर्शन किया प्रदर्शनी का निरीक्षण कर प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले को पुरस्कृत किया गया आचार्य दक्षता वर्ग में भोपाल सिंह चंद्रावत, ईश्वर सिंह सोलंकी, भेरुलाल मालवीय, कन्हैयालाल कुमावत आदि संकुल के समस्त प्रधानाचार्य बंधु की गरिमामय में उपस्थिति रही। कार्यक्रम का सफल संचालन जसपाल पाटीदार ने किया। कल्याण मंत्र के साथ आचार्य दक्षता वर्ग संपन्न हुआ। उक्त जानकारी संकुल के प्रचार-प्रसार प्रमुख श्री भेरुलाल मालवीय एवं जिले प्रचार प्रसार प्रमुख सुंदरलाल गुर्जर द्वारा प्रेषित की।

संचार मित्र योजना को लेकर सांसद गुप्ता ने लोकसभा में किया प्रश्न

मंदसौर, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। सांसद सुधीर गुप्ता ने प्रश्नकाल के दौरान लोकसभा में प्रश्न करते हुए कहा कि सरकार ने 'संचार मित्र' नामक एक नई योजना शुरू की है और उक्त योजना की मुख्य विशेषताएँ, योजना के लक्ष्य और उद्देश्य क्या हैं। उन्होंने कहा कि सरकार का इस योजना के प्रायोगिक चरण में मिली उत्साहजनक प्रतिक्रिया को देखते हुए इसे राष्ट्रव्यापी कार्यान्वयन हेतु विस्तारित/बढ़ाने का विचार है और यह योजना देश को दूरसंचार अनुसंधान, विकास और विनिर्माण केंद्र बनाने के लक्ष्य को प्राप्त करने में किस प्रकार सहायक होगी।

प्रश्न के जवाब में संचार एवं ग्रामीण विकास राज्य मंत्री डॉ. पेम्मासानी चंद्र शेखर ने बताया कि सरकारी संचार मित्र स्कीम योजना शुरू की है और इस योजना का उद्देश्य युवा शक्ति भारत के युवाओं को डिजिटल सशक्तिकरण और सामाजिक संपर्क के उत्प्रेरक के रूप में शामिल करना है। संचार मित्र के रूप में नामित किए गए छात्रों द्वारा समुदायों, शैक्षणिक संस्थानों, सार्वजनिक स्थानों आदि में सक्रिय रूप से जागरूकता अभियान चलाना अपेक्षित होगा, जिसमें नागरिक-केंद्रित दूरसंचार सेवाओं, दूरसंचार फ्रॉड की रोकथाम और मोबाइल सुरक्षा डिजिटल सुरक्षा को बढ़ावा देना और जिम्मेदार दूरसंचार उपयोग को प्रोत्साहन देने जैसे प्रमुख दूरसंचार-संबंधी मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि यह स्कीम उन तकनीकी संस्थानों के छात्रों के लिए है जो दूरसंचार, इलेक्ट्रॉनिक्स, कंप्यूटर, साइबर सुरक्षा या इसी प्रकार के कार्यक्रम संचालित करते हैं और इस स्कीम में भाग लेने के लिए सहमत हैं। उन्होंने बताया कि इस स्कीम को देशव्यापी कार्यान्वयन के लिए शुरू किया गया है। एलएसए - दूरसंचार विभाग के फील्ड कार्यालयों, ने इस स्कीम में भागीदारी के लिए संस्थानों से संपर्क करना शुरू कर दिया है। संचार मित्रों को साइबर सुरक्षा, दूरसंचार क्षेत्र में उभरती प्रौद्योगिकियों, दूरसंचार नीतियों और विनियमों आदि जैसे विषयों पर विभिन्न प्रशिक्षण दिए जाएंगे। चयनित संचार मित्रों को अनुसंधान एवं विकास और नवाचार परियोजनाओं, आईटीयू मानकों और नीतिगत कार्यों, तकनीकी सम्मेलनों, उद्योग की भागीदारी आदि का अनुभव प्राप्त करने का अवसर भी मिलेगा। यह स्कीम कुशल और प्रेरित कार्यबल तैयार करके भारत के दूरसंचार अनुसंधान, विकास और विनिर्माण हब बनने के विजन को पूरा करने में भी योगदान देती है।

अनुराग जनजागरण पदयात्रा कल

मंदसौर, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। स्वच्छता, पर्यावरण व जल संवर्धन के लक्ष्य को लेकर मन्दसौर नगर से अनुराग (प्रेम) रखने वाले गणमान्य नागरिकों के मार्गदर्शन में पदयात्रा निकाली जाएगी। प्रत्येक माह के प्रथम रविवार को निकाली जाने वाली पदयात्रा दिनांक 3अगस्त 2025, रविवार को प्रात: ठीक 8.30 बजे, साई मंदिर, अभिनंदन नगर से प्रारम्भ होकर आनन्द विहार, शंखेश्वर कॉलोनी, अभिनंदन नगर, मन्दसौर क्षेत्र में भ्रमण करेगी। पैदल चलने में असमर्थ महानुभाव प्रात:9 से9.15 के मध्य एकत्रीकरण स्थल साई मंदिर, अभिनंदन नगर, मन्दसौर पर पधारकर आमजन हित के इस अभियान को अपना नैतिक समर्थन अवश्य प्रदान करें।

अमानक खाद्य तेल संग्रहण एवं विक्रय कारोबारी पर दो लाख रूपये का जुर्माना

नीमच/मनासा, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम, के तहत अपर जिला दण्डाधिकारी श्रीमती लक्ष्मी गामड़ ने एक प्रकरण में खाद्य पदार्थ सोयाबीन तेल अवमानक संग्रहित कर विक्रय करनें पर एक कारोबारी पर दो लाख रूपये का जुर्माना आरोपित किया है। एडीएम द्वारा उक्त प्रकरण में एक अगस्त को पारित आदेशानुसार आरोपी श्री प्रदीप नामदेव पिता रमेशचन्द्र नामदेव, फर्म माँ आई जी मिष्ठान कारगील चौराहा मनासा म.प्र. पर 2 लाख रूपए की शास्ति अधिरोपित की गई है।

जिला स्तरीय पर्यटन क्विज प्रतियोगिता सम्पन्न

मंदसौर, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। मध्य प्रदेश पर्यटन विकास निगम भोपाल द्वारा आयोजित जिला स्तरीय पर्यटन क्विज प्रतियोगिता का आयोजन लाल बहादुर शास्त्री शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय मंदसौर में 1 अगस्त को किया गया। इस प्रतियोगिता के लिए मंदसौर जिले के शासकीय और अशासकीय विद्यालय की 123 टीमों ने पंजीयन करवाया था जिसमें से 91 टीम प्रतियोगिता में सम्मिलित हुई। प्रतियोगिता के नोडल अधिकारी डॉ विनीता प्रधान प्राचार्य उत्कृष्ट विद्यालय मंदसौर ने बताया कि यह प्रतियोगिता दो चरणों में संपन्न हुई प्रथम चरण में 91 टीमों के द्वारा 100 प्रश्नों का प्रश्न पत्र हल किया तथा सर्वाधिक अंकों के आधार पर 6 टीमों का चयन किया गया जिसने प्रतियोगिता के द्वितीय राउंड ऑडियो विजुअल राउण्ड में भाग लिया।

प्रतियोगिता की क्विज मास्टर श्रीमती कीर्ति सक्सेना ने ऑडियो विजुअल राउंड को संपन्न करवाया। प्रतियोगिता के द्वितीय राउंड में उत्कृष्ट विद्यालय की टीम ने सर्वाधिक अंक प्राप्त करके प्रथम स्थान प्राप्त किया। उत्कृष्ट विद्यालय की यह टीम राज्य स्तर पर आयोजित पर्यटन क्विज़ प्रतियोगिता में मंदसौर जिले का प्रतिनिधित्व करेगी दूसरे नंबर पर विजेता टीम श्री दलोदा पब्लिक स्कूल दलौदा, तीसरे नंबर पर विजेता टीम श्री साई पब्लिक स्कूल दलौदा रही तथा उपविजेता टीम क्रमश: शासकीय उत्कृष्ट उच्तर माध्यमिक विद्यालय भानपुरा, अंकुर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दलौदा, सुमन उच्तर माध्यमिक विद्यालय दलौदा की टीम रही। प्रतियोगिता के अंत में अतिथि द्वारा विजेता एवं उपविजेता टीम को प्रमाण पत्र तथा पर्यटन विकास निगम द्वारा पर्यटन पर जाने के लिए नि:शुल्क कूपन देकर तथा मेडल पहनाकर सम्मान किया गया। प्रतियोगिता के द्वितीय चरण में पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती दुर्गा पाटीदार, नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती रामादेवी गुर्जर, भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता तथा पूर्व विधायक श्री यशपाल सिंह सिसोदिया, जनपद अध्यक्ष श्री बसंत शर्मा, नगर पालिका उपाध्यक्ष श्रीमती नम्रता चावला, जिला पंचायत उपाध्यक्ष डॉ. श्रीमती मनु प्रिया यादव, मण्डल अध्यक्ष श्री डगवार, वार्ड पार्षद श्रीमती सुनीता भावसार, कलेक्टर श्रीमती अदिति गर्ग, पर्यटन एवं पुरातत्व विकास विभाग के प्रभारी तथा संयुक्त कलेक्टर श्री चंदरसिंह सोलंकी रहे। इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती रमादेवी गुर्जर ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि जीवन में खूब परिश्रम करें तथा सदैव सफलता की ओर अग्रसर होते रहे उन्होंने सभी प्रतिभागियों को सफलता के लिए बधाई दी। जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती दुर्गा पाटीदार ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि सफलताएं परिश्रम से अर्जित होती है उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित किया कि वह जीवन मैं निरंतर उन्नति चाहते हैं तो इस प्रकार की प्रतियोगिताओं में बढ-चढकर भाग ले। पूर्व विधायक श्री यशपाल सिंह सिसोदिया ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि इतनी बड़ी संख्या में पूरे जिले के विद्यार्थियों का आना निश्चित रूप से उनके मन में उत्साह का भाव होगा और विद्यार्थी स्वयं मेहनत करते हैं उनके पालक और शिक्षक मार्गदर्शन देते हैं तभी जीवन में विद्यार्थी सफलता प्राप्त करते हैं। उन्होंने आयोजन के लिए शासन, प्रशासन, राजनीतिक पदाधिकारी, कलेक्टर, शिक्षा विभाग के अधिकारी सबको बधाई दी। कलेक्टर श्रीमती अदिति गर्ग ने इस अवसर पर विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि बहुत ही प्रसन्नता हो रही है की विभिन्न विद्यालयों के छोटे बच्चों ने कुशलता के साथ प्रतियोगिता में भाग लिया और प्रतियोगिता को जीता है। उन्होंने यह भी कहा कि निरंतर इस तरह की प्रतियोगिताओं के ऐसे आयोजन निरन्तर जाएंगे तथा चयनित टीमों को भी प्रयास करेंगे की भोपाल ले जाकर प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिता को देखने का अवसर दें। अतिथि गण का पुष्पमालाओं से स्वागत जिला शिक्षा अधिकारी सुश्री टेरेसा मिंज तथा अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक श्री लोकेंद्र डाबी द्वारा आभार व्यक्त किया गया। पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का संचालन विजय जोशी उच्च माध्यमिक शिक्षक उत्कृष्ट विद्यालय मंदसौर ने किया।

जीएसटी से खजाने में आए 1.96 लाख करोड़ रुपए

नई दिल्ली, 01 अगस्त। सरकार को जीएसटी के मोर्चे पर लगातार बड़ी खुशखबरी मिल रही है। सरकार का त्रस्ज्ज से तगड़ा कलेक्शन हो रहा है। ये लगातार बढ़ता जा रहा है। 1 अगस्त को जुलाई में हुए जीएसटी कलेक्शन के आंकड़े सामने आए हैं। बीते महीने सरकार को 1.96 लाख करोड़ रुपए मिले हैं, जो पिछले साल के इसी महीने के मुकाबले 7.5 प्रतिशत ज्यादा है। जून 2025 में जीएसटी कलेक्शन 1,84,597 करोड़ रुपए देखने को मिला था। अगर बात पिछले वित्त वर्ष 2024-25 की करें तो कुल जीएसटी कलेक्शन रिकॉर्ड 22.08 लाख करोड़ रुपए था। इससे पहले अप्रैल 2025 में जीएसटी कलेक्शन 2.37 लाख करोड़ रुपए था, जो सालाना आधार पर 12.6 प्रतिशत ज्यादा था। ये लगातार सातवां महीना है, जब जीएसटी कलेक्शन 1.8 लाख करोड़ से ज्यादा हुआ है। अप्रैल से जुलाई तक जीएसटी कलेक्शन टोटल 8.18 लाख करोड़ हो गया है। इसका मतलब ये है कि हर महीने औसतन जीएसटी कलेक्शन 2 लाख करोड़ से ज्यादा है, जो पिछले साल 1.8 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा का था। बजट में सरकार ने वर्ष के लिए जीएसटी रेवेन्यू में 11 प्रतिशत की बढ़ोतरी का अनुमान लगाया है, जिसमें केंद्रीय जीएसटी और कंपनसेशन सेस सहित 11.78 लाख करोड़ रुपये का कलेक्शन का अनुमान है।

कलेक्टर ने मजिरिया में किया आंगनवाड़ी केंद्रों का निरीक्षण

नीमच/मनासा, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। कलेक्टर श्री हिमांशु चंद्रा ने शुक्रवार को मनासा जनपद के ग्राम मजिरिया में स्थित आंगनवाड़ी केंद्र क्रं. एक एवं दो का आकस्मिक निरीक्षण कर बच्चों की उपस्थिति, पोषण आहार वितरण, नाश्ता व भोजन वितरण का जायजा लिया। उन्होने बच्चों से आंगनवाड़ी केंद्र में नियमित आने, नाश्ता व भोजन वितरण एवं गुणवत्ता के बारे में पूछा। कलेक्टर ने आंगनवाड़ी के बच्चो के टीकाकरण की भी जानकारी ली। इन केंद्रो में दर्ज बच्चों की तुलना में अच्छीं उपस्थिति पाई गई। कलेक्टंर ने मजिनिया क्र.1, आंगनवाड़ी केंद्र की कार्यकर्ता द्वारा बच्चों को केंद्र में करवाई जा रही बाल सुलभ गतिविधियों की सराहना भी की। कलेक्टर श्री चंद्रा ने पंचायत सचिव को आंगनवाड़ी केंद्र भवन में पर्याप्तं लाईट लगवाने, स्कूल परिसर की साफ-सफाई व घास की साफ-सफाई करवाने के निर्देश भी दिए। उन्होयने क्षतिग्रस्ते अतिरिक्तग कक्ष एवं अनुपायोगी कीचन शेड को डिस्मेंईटल करवाकर वहाँ नया अतिरिक्तप शाला कक्ष निर्माण करवाने के निर्देश भी दिए। कलेक्टर ने आंगनवाड़ी में उपस्थित शाला जाने योग्य दो बालिकाओं को स्कूल में नियमित रूप से भेजकर, अध्यापन करवाने के लिए अभिभावकों को प्रेरित करने के निर्देश भी दिए। इस अवसर पर जिला कार्यक्रम अधिकारी सुश्री अंकिता पंड्या, एसडीएम श्री पवन बारिया, जनपद सीईओ श्री आरीफ खान, जिला शिक्षा अधिकारी श्री एस.एम.मांगरिया, डीपीसी श्री दिलीप व्यास सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

माहेश्वरी माध्यमिक विद्यालय का स्थापना दिवस एवं नवगठित छात्र संसद शपथ विधि समारोह सम्पन्न

मंदसौर, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। स्थानीय माहेश्वरी माध्यमिक विद्यालय का 55वां स्थापना दिवस श्री बलराम गुप्ता (चण्डक) के मुख्य आतिथ्य, श्री पुष्कर (राजू)सोमानी की अध्यक्षता एवं श्री दिलीप धूत के विशेष आतिथ्य में मनाया गया। इस दौरान विद्यालय की नवगठित छात्र संसद का शपथ विधि समारोह भी सम्पन्न हुआ।

प्रारंभ में अतिथियों ने माँ सरस्वती के चित्र का पूजन अर्चन किया। तत्पश्चात् अतिथियों का कुमकुम तिलक से स्वागत किया। इस अवसर पर माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष श्री महेश (बंकट) सोमानी, सचिव श्री गोपालदास पसारी, श्री चारभुजानाथ मंदिर पंच माहेश्वरीयान ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री कृष्णचन्द्र चिचानी, सचिव श्री सत्यनारायण छापरवाल तथा श्री माहेश्वरी संघ के संरक्षक श्री विजय चौधरी, सचिव श्री कृष्णकुमार जाखेटिया, कोषाध्यक्ष श्री विजय पलोड़, सहसचिव श्री श्याम मालू एवं वासुदेव सोमानी विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के वरिष्ठ शिक्षक श्री रमेशचन्द्र परवाल ने तथा आभार प्रदर्शन प्रधानाध्यापक श्री किशोर कुमार सोनी ने किया। मिठाई, बिस्किट केले के वितरण के पश्चात् कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

महाराष्ट्र समाज उन्नयन समिति द्वारा कावड़ यात्रा कल

मंदसौर, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। महाराष्ट्र समाज उन्नयन समिति द्वारा सावन के महिने में समाज जन द्वारा कावड यात्रा दिनांक 3 अगस्त 2025, रविवार को प्रात: 7 बजे निकालने का निर्णय लिया गया है। यह कावड़ यात्रा गाँधी चौराहा स्थित विश्वपति शिवालय से प्रारंभ होकर पुराना बस स्टेण्ड, घंटा घर, सदर बाजार रोड, शुक्ला चौक, धानमंडी, वीर सावरकर सेतु होते हुए श्री पशुपतिनाथ महादेव मंदिर पहुंचेगी। यह सूचना समाज के सचिव श्री अनिल झांसीवाले द्वारा दी गई।

जिले में दस्तक अभियान का सघन निरीक्षण

मंदसौर, 01 अगस्त गुरु एक्सप्रेस। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी द्वारा बताया गया कि मंदसौर जिले में चल रहे दस्तक अभियान के तहतजिला सीपीएचसी सलाहकार डॉ. प्रियांशी जैन (ख/लउक्र्ज 2) और डॉ. वैभव गुप्ता ने मल्हारगढ़ ब्लॉक के ग्राम कनघटी का दौरा किया। इस निरीक्षण का मुख्य उद्देश्य दस्तक अभियान के क्रियान्वयन का जायजा लेना और विशेष रूप से दो गंभीर गर्भवती महिलाओं को व्यक्तिगत रूप से परामर्श प्रदान करना था। निरीक्षण के दौरान, डॉ. जैन और डॉ. गुप्ता ने मधु माला महेश गायरी (उम्र 26 वर्ष) और रेशमा अनिल किर (उम्र 20 वर्ष) नामक दो गर्भवती महिलाओं के घर जाकर उनसे मुलाकात की। दोनों महिलाओं को गहन काउंसलिंग प्रदान की गई, जिसमें उन्हें पोषण आहार के महत्व और सेवन के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। इसके अतिरिक्त, उन्हें प्रसव एवं प्रसव पश्चात शिशु की देखभाल से संबंधित महत्वपूर्ण सलाह भी दी गई, ताकि वे एक स्वस्थ प्रसव और शिशु के बेहतर भविष्य के लिए तैयार रह सकें। दोनों ही महिलाओं का हीमोग्लोबिन स्तर कम पाया गया था (मधु माला का 7.9 और रेशमा का 7.6)। रेशमा अनिल किर का पूर्व में LACS (Lower Abdominal Cesarean Section) भी हो चुका है, जो उनकी स्थिति को और अधिक संवेदनशील बनाता है।

✻ अंतिम यात्रा ✻

भंवरलाल (सैनी कचोरी वाले), नंदराम, छोटेलाल, अर्जुनलाल, लालचंद सैनी की माताजी एवं अशोक, आनंद, सत्यानारायण, राजेश, पंकज, मोनू, गोलू, प्रिंस, आकाश की दादीजी व हितेश, लकी, पीयूष, राज, सनी, सागर, की परदादी श्रीमती रामाबाई धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री चौथमल जी सैनी का स्वर्गवास 1/8/2025 शुक्रवार को हो गया है जिनकी शव यात्रा 2/8/2025 शनिवार को दोपहर् 1:00 बजे निज निवास ग्राम खात्याखेड़ी (पिपलिया मंडी) के पास से निकलेगी

✻✻✻ शोकाकुल ✻✻✻
समस्त सैनी परिवार
कचोरी वाला, खात्याखेड़ी
(पिपलिया मंडी)

कार्यालय कलेक्टर (खनिज शाखा) जिला मंदसौर (म.प्र.)

E-Mail-modgmman@mp.gov.in

क्रमांक/1243/खनिज/2025 मंदसौर, दिनांक-29.07.2025

✻✻✻✻✻ सूचना ✻✻✻✻✻

(म.प्र. गौण खनिज नियम 1996 के नियम, 18-क)

यह सूचित किया जाता है कि आवेदक श्री पवनकुमार पाटीदार पिता रामचंद्र पाटीदार निवासी मगराना, तहसील मल्हारगढ़, जिला मंदसौर, जिला मंदसौर द्वारा म.प्र. गौण खनिज नियम, 1996 के नियम 18-क के तहत उत्खनिपट्टा नवकरण प्राप्त करने हेतु ऑनलाईन आवेदन पत्र दिनांक 17.07.2025 को प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत आवेदन पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है-

जिला	तहसील	ग्राम	खसरा नंबर	रकबा	भूमि का प्रकार निजी/अन्य भूमि स्वामी की सहमति प्राप्त	खनिज का नाम	रिमार्क
मंदसौर	मल्हारगढ़	डोडियामीणा	566/1	2.000 हे.	शासकीय	गिट्टी एवं एम. सेण्ड (क्रेशर आधारित)	---

उपरोक्त प्रस्तुत ऑनलाईन पत्र में आवेदित क्षेत्र के संबंध में यदि किसी को कोई आपत्ति हो अथवा इस संबंध में कोई अन्य दावा प्रस्तुत करना चाहता हो तो इस सूचना के प्रकाशित होने की तारीख से 30 दिवस के भीतर कार्यालय कलेक्टर, खनिज शाखा, जिला मंदसौर में आपत्ति का लेख/कारण दर्शाते हुए लिखित रुप से प्रमाण सहित प्रस्तुत करें।

नियत अवधि के उपरान्त प्रस्तुत किसी भी आपत्ति/दावे पर विचार नहीं किया जाएगा।

प्रभारी अधिकारी
खनिज शाखा जिला मंदसौर म.प्र.

G-16557/25 जीवन है अनमोल, तो क्यों करे यातायात नियमों से खेल।

कार्यालय सम्पदा प्रबंधक
म.प्र. गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मंडल मंदसौर
नामान्तरण -सूचना

मण्डल की आवासीय कॉलोनी दलोदा जिला मंदसौर स्थित भूखण्ड क्रमांक MIG.II-35 श्रीमती प्रेमलता जैन पति श्री पारसमल जैन को मण्डल आदेश क्रमांक 1421 दिनांक 23.03.2006 द्वारा आवंटित किया गया था। उक्त भूखण्ड का पट्टाभिलेख दिनांक 03.09.2020 को उप-पंजीयक कार्यालय में पंजीयन निष्पादित करवाया गया था। श्रीमती प्रेमलता जैन पति श्री पारसमल जैन का स्वर्गवास दिनांक 11.11.2021 को हो जाने से इनके पुत्र श्री संजय जैन पिता श्री पारसमल जैन अपने पिता श्री पारसमल जैन पिता श्री कारुलाल जैन एवं अपने भाई श्री नीरज चौहान पिता श्री पारसमल जैन एवं दोनों बहनों 1. श्रीमती मीना मेहता पति श्री मनोज मेहता 2. श्रीमती कंथालिया रेखा पति श्री अमर सिंह की सहमति एवं प्रस्तुत दस्तावेजो के आधार पर उक्त भूखण्ड का नामान्तरण श्री संजय जैन पिता श्री पारसमल जैन अपने नाम पर करवाना चाहते है।

अत: इस सम्बन्ध में यदि किसी व्यक्ति/संस्था/परिवार के सदस्य/ वित्तीय संस्था को कोई आपत्ति/उर्ज हो तो वह विज्ञापन प्रकाशन दिनांक से 15 दिवस में मय ठोस प्रमाण के कार्यालय में प्रस्तुत करे समयावधि व्यतीत हो जाने पर उक्त भूखण्ड का नामांतरण श्री संजय जैन पिता श्री पारसमल जैन के नाम से कर दिया जावेगा उसके पश्चात कोई भी दावा/आपत्ति/उर्ज मान्य नही होगा।

(रिपुदमन सिंह चंद्रावत)सम्पदा प्रबंधक
म.प्र. गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास
मंडल मंदसौर (मप्र)

कार्यालय सम्पदा प्रबंधक
म.प्र. गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मंडल मंदसौर
नामान्तरण -सूचना

मण्डल की आवासीय कॉलोनी रामटेकरी मंदसौर स्थित भवन क्रमांक LIG.A-60 श्री ओमप्रकाश मिश्रा पिता श्री शशिभूषण मिश्रा को आवंटित किया गया था। उक्त भवन का विक्रय विलेख दिनांक 26.05.1994 को उप-पंजीयक कार्यालय में पंजीयन निष्पादित करवाया गया था। श्री ओमप्रकाश मिश्रा पिता श्री शशिभूषण मिश्रा का स्वर्गवास दिनांक 19.02.2017 को चूका है। श्री ओमप्रकाश मिश्रा पिता श्री शशिभूषण मिश्रा द्वारा अपनी मृत्यु के पूर्व वसीयत अपनी पुत्रवधु श्रीमती उषा मिश्रा पति श्री सुधीर मिश्रा को दिनांक 21.01.2011 को इनके पक्ष में निष्पादित की थी तथा विक्रय विलेख में इन्हें नामजद किया है। उक्त वसीयत, नामजदगी एवं प्रस्तुत दस्तावेजो के आधार पर उक्त भवन का नामान्तरण श्रीमती उषा मिश्रा पति श्री सुधीर मिश्रा अपने नाम पर करवाना चाहती है।

अत: इस सम्बन्ध में यदि किसी व्यक्ति/संस्था/परिवार के सदस्य/वित्तीय संस्था को कोई आपत्ति/उर्ज हो तो वह विज्ञापन प्रकाशन दिनांक से 15 दिवस में मय ठोस प्रमाण के कार्यालय में प्रस्तुत करे समयावधि व्यतीत्त हो जाने पर उक्त भवन का नामांतरण श्रीमती उषा मिश्रा पति श्री सुधीर मिश्रा के नाम से कर दिया जायेगा उसके पकात कोई भी दावा/आपत्ति/उर्ज मान्य नहीं होगा।

(रिपुदमन सिंह चंद्रावत)सम्पदा प्रबंधक
म.प्र. गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास
मंडल मंदसौर (मप्र)

सार्वजनिक सूचना
✻✻✻✻✻ नाम परिवर्तन ✻✻✻✻✻

मैं, अंकिता पिता भारत निवासी: ग्राम: जग्गाखेडी (मंदसौर), पोस्ट: मंदसौर जिला: मंदसौर, मध्य प्रदेश - 458002, ने अपना नाम बदल लिया है और अब से मैं निशा गुर्जर पिता भारत के नाम से जानी जाऊँगी तथा यह नाम परिवर्तन मेरी अपनी इच्छा से किया गया है और यह नाम अब से सभी सरकारी एवं गैर-सरकारी कार्यों में उपयोग किया जाएगा।

नाम: अंकिता
दिनांक: 02/08/2025

PUBLIC NOTICE
CHANGE OF NAME

I, ANKITA, Daughter of BHARAT, residing at Village- JAGGAKHEDI (mandsaur), POST: JAGGAKHEDI DIST: MANDSAUR, MADHYA PRADESH-458002 I have changed my name and shall hereafter be known as NISHA GURJAR Daughter of BHARAT For all future purpose.

Name: ANKITA
Date: 02/08/2025

न्यायालय तहसीलदार तहसील मंदसौर नगर जिला मन्दसौर (म.प्र.)

न्यायालय कले. प्रकरण क्रमांक-55/अ-20(3)/2025-26
ईश्यू नंबर 678/ रीडर-1/2025
मंदसौर, दिनांक-29.07.2025

सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग मध्यप्रदेश......आवेदक
विरुद्ध मध्यप्रदेश शासन...........अनावेदक

✻ सार्वजनिक सूचना/विज्ञप्ति ✻

सर्वसाधारण एवं जनता मंदसौर तहसील मंदसौर को यह सूचित किया जाता है कि सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग मध्यप्रदेश द्वारा ग्राम गुराडियादेदा की शासकीय भूमि सर्वे नंबर 1117/2 कुल रकबा 2.450 हे. में से रकबा 2.450हे. मद शासकीय को औद्योगिक प्रयोजन (क्लास्टर/ मध्यम उद्योग की स्थापना हेतु) आबंटित किये जाने की मांग गई है।

आवेदक के अतिरिक्त अन्य कोई प्रश्नाधीन भूमि का आरक्षण समान प्रयोजन के लिए अथवा प्रश्नाधीन भूमि का आबंटन चाहता है तो वह भी अपना दावा अपनी अर्हताओं के विवरण के साथ कंडिका 09 की अपेक्षाओं की पूर्ति करते हुए इस कार्यालय को सार्वजनिक सूचना में उल्लेखित नियत अवधि के भीतर प्रस्तुत कर सकेगा।

अत: आवेदक को 9 को उक्त भूमि आबंटित किये जाने के विषय में जिस किसी व्यक्ति अथवा संस्था को कोई आपत्ति/सुझाव हो तो वह इस प्रकरण में नियत पेशी दिनांक 13/08/2025 तक स्वयं अथवा किसी वैध प्रतिनिधि के माध्यम से प्रस्तुत कर सकता है। नियत समयावधि के उपरान्त प्रस्तुत की गई किसी भी आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा। सर्वसंबंधित सूचित हो।

आज दिनांक 29/07/2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की पदमुद्रा से उक्त विज्ञप्ति जारी की गई।

G-16578/25 दुर्घटना से रखनी दूरी है तो हेलमेट सबसे जरूरी है। तहसीलदार तहसील मंदसौर नगर

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक आशुतोष नवाल के लिए गुरु मीड्यिा एण्ड इंटरटेनमेन्ट कम्पनी, शक्ति नगर मन्दसौर से मुद्रित एवं 77 लक्ष्मीनगर, वेदान्त विहार मन्दसौर से प्रकाशित। (हर प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र मन्दसौर रहेगा) संपादक- आशुतोष नवाल RNI-MPHIN2006/20356
समाचार पत्र में छपे विज्ञापनों के लिए समाचार पत्र उत्तरादायी नहीं है एवं विज्ञापनो में प्रकाशित विचार विज्ञापनदाता की निजी राय है। इससे समाचार पत्र का कोई संबंध नहीं है। फोन 313880, मो. 9425105927,28 ashugurumds@gmail.com, ashu_guru2@yahoo.co.in